मई-२०१७ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक १२ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई-२०१७

ऋषि दयानन्द की हुंकार
स्वराज्य से सर्वाधिक प्यार
सत्यार्थ प्रकाश में
यही निरूपित
राष्ट्रोन्नति ही पहला कार्य
बलिहारी राणा प्रताप की
दिया देश पर सब कुछ वार

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१० ६५

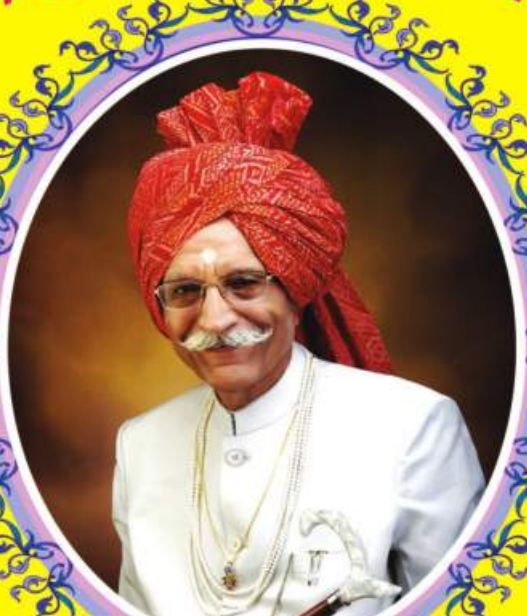

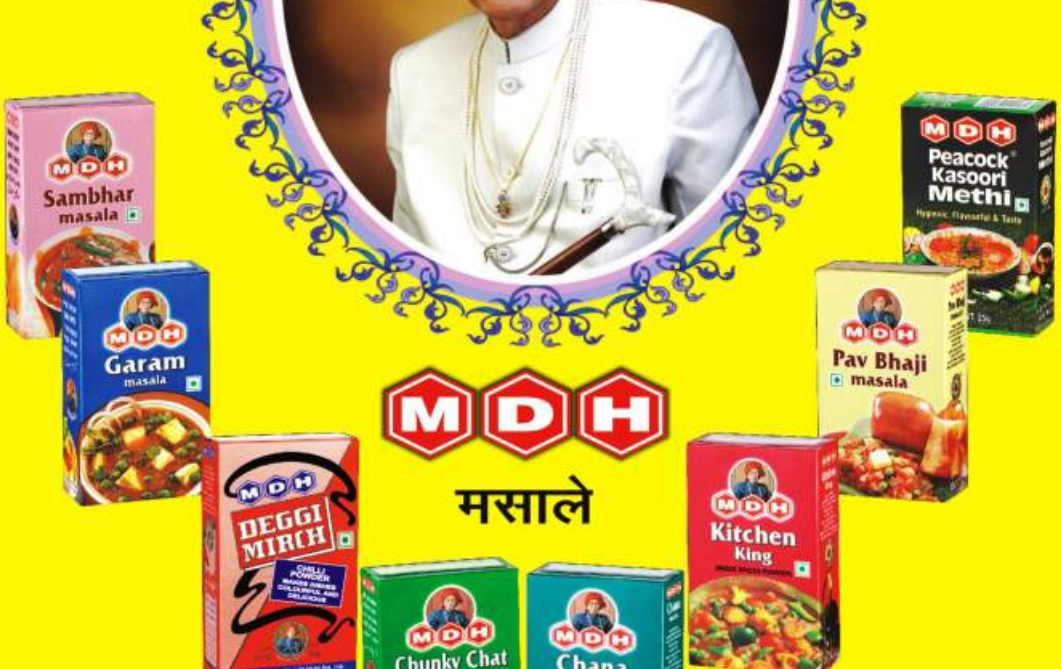

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
M D H
मसाले
असली मसाले
सच - सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक -	११००० रु.	$ 1000
आजीवन -	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय -	४०० रु.	$ 100
वार्षिक -	१०० रु.	$ 25
एक प्रति -	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११८ वैशाख शुक्ल द्वादशी विक्रम संवत् २०७४ दयानन्दाब्द १९३

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

May - 2017

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

२६ स मा चा र

२७ ह ल च ल

०४	वेद सुधा
०७	सरस्वती ऋषि
०८	अभिमान
०६	वीर-वीरांगनाओं का अपमान
११	स्वाभिमानी मेवाड़
१३	'ईश्वर का विचित्र संसार'
१५	हुतात्मा आर्य समाजी
१७	गौरक्षा से उत्तम प्रदेश
२२	अहिल्या बाई होल्कर
२३	काश्मीर के शर्मनाक हालात
२४	साधारण, पर असाधारण
२५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/१७
२८	स्वास्थ्य- छाछ है महा वरदान
२६	कथा सरित- हर कोई उपयोगी
३०	सत्यार्थ पीयूष- शासन विकेन्द्रीकरण

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - १२

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२६४) २४१७६६४, ०६३१४५३५३७६, ०६८२६०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन्निषून्हृत्स्वसो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात्॥ - ऋग्वेद १/८४/१६

प्रस्तुत वेदमंत्र में जीवन को ज्ञानोज्ज्वल बनाने की प्रेरणा की गई है। ज्ञान मनुष्य की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति है। उसके अभाव में कर्म, उपासना कुछ भी नहीं कर सकता। ज्ञान ही उसे यज्ञादि उत्तम कर्मों में प्रवृत्त करता है। नित्य स्वाध्याय अत्यन्त आवश्यक कर्त्तव्य है। ज्ञान की उच्चरित वाणियाँ आन्तरिक शत्रुओं का संहार कर हृदयों में प्रकाश करती हैं। जो व्यक्ति ज्ञान वचनों को अधिक से अधिक धारण करता है वही वस्तुतः सुन्दर जीवन वाला बनता है। जीवन ज्ञान से उज्ज्वल होता है। हम ज्ञान की वाणियों को अधिक से अधिक धारण कर जीवन को उज्ज्वल बनाऐं।

खामोशी हमारे पवित्रतम विचारों का मन्दिर है।
(Silence is temple of our purest thought.)

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ - ऋग्वेद १/८९/१

प्रस्तुत वेदमंत्र में भद्र (कल्याणकारी) कर्मों को करने की प्रेरणा की गई है। भद्र कर्म वे होते हैं जो सबके कल्याण व सुख के जनक हों। इन कर्मों में आसुर वृत्ति के व्यक्ति विघ्न पैदा न कर सकें। जो संकुचित न होकर विस्तृत रुप से अधिक से अधिक व्यक्तियों के करने वाले हों। भद्र कर्म शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने वाले होते हैं। यज्ञादि कर्म ही भद्र कर्म होते हैं। इनके होने पर आधि दैविक प्राकृतिक आपतियाँ नहीं आतीं। सूर्यादि देव कल्याण करते हैं। विद्वान् ज्ञान देकर मार्ग भ्रष्ट होने से बचाते हैं। हमारे कर्म भद्र हों जिससे सूर्यादि देवों तथा विद्वानों की कृपा से मार्ग भ्रष्ट होने से बच सकें।

अकर्मण्यता ही मृत्यु है।
(Inactivity is death)

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां यज्ञस्य केतुर्मन्मसाधनो वेः।
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ - ऋग्वेद १/९६/६

प्रस्तुत वेदमंत्र में धन को यज्ञों में विनियोग करने की प्रेरणा की गई है। इससे ही अमृतत्व की रक्षा होती है अर्थात् अमृत प्राप्त होता है। प्रभु धन ऐश्वर्य साधनों के स्वामी हैं किन्तु वे सब उनके अपने लिये नहीं जीव की उन्नति के लिये हैं। ज्ञानी धनों को यज्ञों में विनियोग करता है क्योंकि वह जानता है कि यज्ञ शेष ही तो अमृत है। वह भोगासक्त न हो स्वस्थ्य रहता है, उसका मन निर्मल होने से सर्वत्र प्रभु की महिमा को देखता है। वही प्रभु का सच्चा भक्त होता है।
हम प्रभु से प्राप्त धन को यज्ञों में व्यय करें, यज्ञशेष का सेवन करें, सच्चे प्रभु उपासक बन अमृतत्व की रक्षा करें।

धन बहुत महत्वपूर्ण, किन्तु सब कुछ नहीं।
(Money is much important, but not at all.)

संकलन कर्त्ता- महेश गर्ग, सासनी

लानत है ऐसे शिक्षितों पर

भारतीय संविधान के आर्टिकल ५१ ए (एच) में प्रत्येक नागरिक के मौलिक कर्तव्यों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह समाज में वैज्ञानिक मानसिकता, मानवीयता तथा तर्काधारित प्रवृत्ति का विकास करते हुए सुधारों की ओर अग्रसर करेगा। नागरिकों से भी पूर्व यह जिम्मेदारी समाज का नेतृत्व करने वाले नेतागणों की है अथवा शिक्षा शास्त्री व समाज शास्त्रियों की है जिन्हें भारत की अधिकांश अशिक्षित आबादी को इस ओर प्रेरित करना है। अंधविश्वासों के समूल को नष्ट करने हेतु तर्काधारित सोच के विकास की आवश्यकता है। और इसका सर्वप्रमुख साधन शिक्षा का विकास है। सामान्यतया यह सोचा जाता है कि आज २१वीं सदी में जब विज्ञान और वैज्ञानिक सोच ने अविश्वसनीय विकास किया है अंधविश्वासों का निश्चित क्षय हुआ होगा पर स्थिति ठीक उलट दिखायी देती है। हमने गत अंक में रोल मॉडल की चर्चा करते हुए समाज को दिशा देने में उनके महत्त्व का निरूपण किया था क्योंकि सामान्य जनता उन्हीं का अनुसरण करती है। तथ्य यह है कि आज यही तथाकथित शिक्षित वर्ग स्वयं अंधविश्वासों में आकंठ डूबा हुआ है। कुछ समय पूर्व एक कुलपति महोदय ने अपने पद की शपथ ली। वे विश्वविद्यालय में आ तो कभी के गए पर शपथ ठीक तभी ली जब उनके ज्योतिषी ने शुभ मुहूर्त बताया था। शिक्षा के सर्वोच्च मंदिर के प्रमुख की जब यह मानसिकता है तो वे क्या और क्यों कुछ ऐसा करने में समर्थ अथवा तत्पर हो पायेंगे कि छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित हो और अंधविश्वासों से वे विरत् हों। जब एक प्रतिष्ठित दैनिक समाचार के प्रखर विद्वान् सम्पादक और हमारे मित्र ने इस ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया तो हम 'लानत है ऐसी शिक्षा पर' के अलावा कुछ न कह सके।

भारत की आजादी के बाद यह दायित्व राजनेताओं तथा शिक्षा शास्त्रियों का प्रमुख रूप से था कि वे ऐसा तर्काधारित वातावरण तैयार करें जिसमें अंधविश्वास विलीन हो जाये। पर ऐसा तो तब होता जब वे स्वयं उससे मुक्त होते।

एक रिपोर्ट को पढ़ते हुए बड़ा आश्चर्य हुआ कि गत सिंहस्थ मेले के समय मध्यप्रदेश सरकार ने ज्योतिषियों की एक टीम गठित की जो ग्रहशान्ति के समस्त उपाय करेगी ताकि सिंहस्थ शान्तिपूर्वक संपन्न हो सके। ज्योतिषियों का विश्वास था कि सिंहस्थ 'गुरुचंडाल योग' के अधीन होगा जिसमें भगदड़ होने से मौतों की संभावना प्रबल हो जाती है। विश्वास नहीं होता कि २१वीं सदी में भी सरकारी स्तर पर इस प्रकार की अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाली योजना बनायी जाय, पर है यह सत्य।

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश का एक भी मुख्यमंत्री, नेताजी मुलायम सहित नोएडा नहीं गया क्योंकि विश्वास घर कर गया था कि जो नोएडा जाएगा उसके सर से ताज चला जायेगा। मायावती अपने मुख्यमन्त्रित्व काल में अंत में नोएडा गयीं थीं पर वे आगे चुनाव नहीं जीत पायीं। यहाँ तक कि नोएडा में विश्वविद्यालय के शिलान्यास का कार्य बिना नोएडा जाए लखनऊ से ही डिजिटल साधन से संपन्न कर दिया गया।

क्या नाम की अंग्रेजी में कोई अक्षर बढ़ा या घटा देने से व्यक्ति उत्कर्ष के नए आयामों को स्पर्श कर लेगा? आप भले ही इसे हास्यास्पद कहें पर नेताओं का उत्तर हाँ में है। जयललिता ने अंक शास्त्रियों के कहने से अपने नाम में एक अतिरिक्त 'A' जोड़ लिया था।

एक वरिष्ठ नौकरशाह के.एन.राव ने एक पुस्तक लिखी थी। वे ज्योतिषी भी हैं। उन्होंने लिखा कि इंदिरा गाँधी से लेकर वी.सी. शुक्ल तक कोई ऐसा राजनेता न था जो अपने स्वयं के तथा नीतिगत निर्णयों के लिए ज्योतिषियों पर निर्भर न हो। अर्जुन सिंह जैसे सभी नेता हर कदम ज्योतिषी से सलाह लेकर करते थे, यहाँ तक कि ज्योतिषी के सुझाव पर ही अर्जुन सिंह ने सफारी सूट पहनना छोड़कर कुरता पायजामा पहनना शुरू कर दिया था।

बहुत समय पूर्व यह चर्चा आम थी कि जगन्नाथ मिश्र ने अपने ग्रहों को अनुकूल बनाने के लिए १०८ बकरों को कत्ल करवाकर उनके खून में स्नान किया। यद्यपि मिश्र ने इसे स्वीकार नहीं किया पर रिपोर्टों के अनुसार बाद में उनके भतीजे ने इसकी पुष्टि

की। कहा यह भी जाता है कि इंदिरा गाँधी ने इस शक में कि स्वामी पूर्णानन्द एक ऐसे यज्ञ का आयोजन करने की रूपरेखा बना रहे हैं जिससे वे उनके ग्रहों के लाभदायक प्रभाव को खत्म कर देने में सफल रहेंगे, उन्हें तिहाड़ जेल में बन्द रखा।

चारा घोटाला से अपनी जान बचाने हेतु लालू प्रसाद यादव पागल बाबा की शरण में गए और ज्योतिषी की सलाह पर अपने घर

के स्वीमिंग पूल में से पानी निकाल कर उसे रेत से भर दिया ताकि ग्रहों का कोप कम हो जाय। ऐसी ही कुछ और बानगी देखें- रेलगेट स्कैंडल में अपनी कुर्सी बचाने के लिए कहा जाता है कि तत्कालीन रेल मंत्री ने एक बकरे की बलि दिलवायी, तो जयराम रमेश ने अपने खाली ऑफिस में जाने से इनकार कर दिया जो काफी समय से खाली पड़ा था। वो इस कारण से कि उस ऑफिस में एक पूर्व मंत्री की मृत्यु हो गयी थी। यह बात भी चर्चा में रही कि राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने अपने पद की शपथ १३ दिसम्बर को १३ बजकर १३ मिनट पर ली क्योंकि वे अपना लकी नंबर १३ मानती हैं। उन्होंने अपना आवास भी ८ सिविल लाइन की बजाय १३ सिविल लाइन में रखा। कहा जाता है कि ममता बनर्जी ने भी अपने ज्योतिषी की सलाह पर कालीघाट के घर को छोड़ अलीपुर में शिफ्ट कर लिया।

जहाँ एक तरफ अंधविश्वासी नेताओं की भीड़ है तो वहीं सिद्धारमैया जैसे कुछ चंद नेता भी हैं, जिनका व्यवहार अत्यन्त विचित्र है। कर्नाटक का मुख्यमंत्री बनने के बाद सिद्धारमैया ने सबसे पहले चामराजनगर का दौरा किया ताकि लोगों का यह अंधविश्वास टूट सके कि यहाँ जाने वाले मुख्यमंत्रियों की कुर्सी चली जाती है। एक ओर सिद्धारमैया विधानसभा में अंधविश्वास विरोधी विधेयक लाने की कोशिश करते हैं तथा टी.वी. पर राशिफल बताने से लेकर चमत्कारिक दावे करने वाले कार्यक्रमों तक पर रोक लगाने की बात कह चुके हैं, परन्तु दूसरी ओर मैसूर निरीक्षण भ्रमण के समय सारे समय यहाँ तक कि पत्रकार वार्ता के समय भी दायें हाथ में नींबू लिए रहते हैं और पत्रकारों द्वारा इस सम्बन्ध में जिज्ञासा करने पर कोई उत्तर नहीं देते। जानकारों का कहना है कि पुत्र की मृत्यु के पश्चात् वे इन चीजों में विश्वास करने लगे हैं। अरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू भी अंधविश्वास की जकड़ से नहीं बच सके। वे साठ करोड़ से निर्मित सी. एम. हाउस में रहने नहीं गए क्योंकि वे उस आवास को अभिशप्त मानते हैं कारण कि पूर्व मुख्यमंत्री कालिखो पुल ने इसमें आत्महत्या कर ली थी।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री अंधविश्वासों के पीछे भागने में किसी भी तर्क को दरकिनार कर देते हैं। किस प्रकार वास्तु-दोष ठीक कराने हेतु उन्होंने अपने निवास में अनेक परिवर्तन कराये तथा हुसैन सागर की ओर फेस किये सचिवालय को भी वास्तु-विरुद्ध बताया यह जगजाहिर है।

अंधविश्वासी होड़ में ये तथाकथित शिक्षित अंग्रिम पंक्तियों में दिखायी देते हैं तो फिर यह कहना भी समीचीन ही है कि 'लानत है ऐसी शिक्षा पर।'

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सबसे बड़ा धर्म है सेवा,
सेवा है सुख का आधार।
सफल वही होता है जग में,
जो करता है सबसे प्यार॥

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सरस्वती ऋषि

सरस्वती को ब्रह्मा की पुत्री माना जाता है। इसे विद्या की देवी के रूप में भी समाज में जाना जाता है। सरस्वती का ऋग्वेद और यजुर्वेद दोनों में काम पाया जाता है। यजुर्वेद अध्याय २८ के मंत्र संख्या २४, २५, व २६ की वे दृष्टी हैं। तीनों मंत्रों में अलग-अलग विषय हैं।

होता यक्षत्समिधानं महद्यश: सुसमिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रं वयोधसम्।
गायत्री छन्दऽइन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यत॥

- यजु. २८/२४

पदार्थ- हे (होत:) विद्यादि ग्रहण करने वाले जन। आप जैसे (होता) दाता पुरुष (अग्निम्) अग्नि के तुल्य (समिधानम्) सम्यक् प्रकाशमान(सुसमिद्धम्) सुन्दर शोभायमान (वरेण्यम्) ग्रहण करने योग्य (महत्) बड़ा (यश:) कीर्ति (वयोधसम्) अभीष्ट अवस्था के धारक (इन्द्रम्) उत्तम ऐश्वर्य करने वाले योग (गायत्रीम्) सत्य अर्थों का प्रकाश करने वाली गायत्री (छन्द:) स्वतंत्रता (इन्द्रियम्) धन अथवा श्रोत्रादि इन्द्रियाँ (त्र्यविम्) तीन प्रकार से रक्षा करने वाली (गाम्) पृथ्वी और (वय:) जीवन को (दधत्) धारण करता हुआ (यक्षत्) संग करे और (आज्यस्य) विज्ञान के रस को (वेतु) प्राप्त होवे वैसे आप भी (यज) समागम कीजिए।

भावार्थ- इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो पुरुष समाज को सत्य विद्या का दान करते हैं वे अतुल कीर्ति प्राप्त करते हैं।

होता यक्षत्तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भमदितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम्।
उष्णिहं छन्दऽइन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज॥

- यजु. २८/२५

पदार्थ- हे (होत:) ज्ञान के यज्ञ के कर्ता। जैसे (होता) शुभ गुणों का ग्रहण करने वाला जन (तनूनपातम्) शरीरादि के रक्षक (उद्भिदम्) शरीर का भेदन कर निकलने वाले (गर्भम्) गर्भ को जैसे (अदिति:) माता धारण करती है वैसे (यम्) जिसको (दधे) धारण करता है (वयोधसम्) अवस्था के वर्धक (शुचिम्) पवित्र (इन्द्रम्) सूर्य को (यक्षत्) हवन का पदार्थ पहुँचता है। (आज्यस्य) विज्ञान सम्बन्धी (उष्णिहम्) उष्णिक छन्द में कहे हुए (छन्द:) बलकारी (इन्द्रियम्) श्रोत्रादि इन्द्रियों और (दित्यवाहम्) खण्डितों को पहुँचाने वाले (गाम्) वाणी और (वय:) सुन्दर पक्षियों को (दधत्) धारण करता हुआ (वेतु) प्राप्त होवे वैसे इन सबको आप (यज) संगत कीजिए।

भावार्थ- इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यों। जैसे माता गर्भ और उत्पन्न हुए बालक की रक्षा करती है। वैसे आप लोग शरीर और इन्द्रियों की रक्षा करो।

होता यक्षदीडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीड्यꣳसह: सोममिन्द्रं वयोधसम्।
अनुष्टुभं छन्दऽइन्द्रियं पञ्चाविं गां वयोदधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज॥

- यजु. २८/२६

पदार्थ- हे (होत:) यज्ञ करने वाले जन। जैसे (होता) शुभ गुणों का ग्रहीता पुरुष (वृत्रहन्तमम्) मेघ को काटने वाले सूर्य को जैसे वैसे (इडाभि:) अच्छी शिक्षित वाणियों से (ईडेन्यम्) स्तुति करने योग्य (ईडितम्) प्रशंसित (सह:) बल (ईड्यम्) प्रशंसा के योग्य (सोमम्) सोमादि ओषधियाँ और (वयो धसम्) मनोहर वाणियों के धारक (इन्द्रम्) जीवात्मा को (यक्षत्) सगंत करे और (इन्द्रियम्) श्रोत्रादि (अनुष्टुभम्) अनुकूल थांमने वाली (छन्द:) स्वतन्त्रता से (पञ्चाविम्) पाँच प्राणों की रक्षा करने वाली (गाम्) पृथ्वी और (आज्यस्य) जानने योग्य जगत् के बीच (वय:) अभीष्ट वस्तु को (दधत्) धारण करता हुआ (वेतु) प्राप्त होवे वैसे आप इन सबको (यज) संगत कीजिए। इति।

- शिव नारायण उपाध्याय
कोटा

वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर का ८९ वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य विरक्त वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम, ज्वालापुर का ८६ वाँ

वार्षिकोत्सव दिनांक १५ अप्रैल २०१७ से १८ अप्रैल २०१७ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों के प्रवचन हुए वहीं जाने माने भजनोपदेशकों के सुमधुर भजनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर वरिष्ठ साधक सर्वश्री प्रभात गुप्ता, सुबोध कुमार गुप्ता एवं सुरेन्द्र शर्मा आदि को सम्मानित किया गया।

- सुबोध गुप्ता (मुनि), हरिद्वार

आर्य समाज हिरण मगरी के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी के वार्षिक चुनाव श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ

प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। प्रधान श्री भंवरलाल आर्य, मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा, कोषाध्यक्ष श्री अम्बालाल सनाढ्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

अभिमान या अहंकार एक ऐसा अवगुण है जो किसी न किसी गुण से जन्म लेता है और पैदा होने पर उसी गुण को नष्ट कर देता है। जैसे ज्ञान का अभिमान इस अवगुण के कारण ज्ञान को हर लेता है, मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। रावण को अपने धन बल ज्ञान का अहंकार था और उसी मद में मदहोश रावण की बुद्धि इस अवगुण ने हर ली और अंत में घमंडी का सिर नीचा। इसी एक अवगुण के कारण रावण का विनाश हुआ। वैसे भी इतिहास साक्षी है कि अभिमान के कारण बड़े-बड़े राजा महाराजा रावण कंस दुर्योधन आदि का विनाश हुआ। अभिमान एक ऐसा दीमक है जो अंदर ही अंदर अभिमानी को खोखला कर देता है। गुण से पैदा यह अवगुण सबसे पहले उसी गुण को खा जाता है। महाभारत में अहंकार को नाक का मूल कहा गया है। अभिमान विनाश का वह रास्ता है जिस पर अभिमानी किसी गुण की ऊँचाई से बड़ी तेजी से फिसलता हुआ इतिहास की तलहटी की उन गहरी खाईयों में जाकर गिरता है जहाँ पहले से ही कई अहंकारियों के नरकंकाल उसे अट्टाहास कर आमंत्रित कर रहे होते हैं। आओ तुम भी इतिहास की इन गहरी खाईयों में समा जाओ। अर्थात् अभिमानी का विनाश अवश्यंभावी है। अभिमानी की तुलना सूखे ठूंठ से करते हुए कहा है-

अकड़ू यूं तन कर खड़ा, लगे ठूंठ सा खूब।
आँधी में औंधा पड़ा, बची रही लघु दूब।।

गुणों के फलों से लदा वृक्ष उन गुण रूपी फलों के कारण विनम्रता से झुक जाता है जबकि अहंकारी अभिमानी गुण विहीन होकर सूखे ठूंठ की भाँति अकड़ कर खड़ा रहता है और हवा के झोंके से गिर कर नष्ट हो जाता है। अभिमान करना अज्ञानी का लक्षण है। कभी किसी का अभिमान जिंदा नहीं रहता अपितु अभिमान का बोझ अभिमानी को लेकर डूबता है। अभिमान हमेशा अपमान का कारण बनता है लेकिन अभिमानी कभी अपने अपमान को नहीं भूलता। रामायण काल में रावण का अभिमान उसके अपमान और अंततः विनाश का कारण बना तो महाभारत काल में दुर्योधन के विनाश का कारण भी उसका अहंकार ही था। यदि किसी भरे हुए घड़े में अभिमान रूपी छेद हो जाए तो वह अंततः उसे खाली कर देता है।

यजुर्वेद में आदेश दिया है **छिद्रं पृण** (१२/४५) अर्थात् अपने दोषों अभिमान को दूर करो। वेद भगवान ने अभिमान रूपी छेद को भर देने का आदेश दिया ताकि जीवन रूपी घड़ा गुणों से भरा रहे। पानी से भरे घड़े में यदि छेद हो जाये वह खाली हो जाता है ठीक उसी प्रकार यदि मनुष्य के जीवन घट में अहंकार का छेद हो जाए तो उसके गुण समाप्त हो जाते हैं और उसके मन बुद्धि इंद्रियों पर उसका नियंत्रण नहीं रहता और जब उसके स्वयं के साधन ही उसके आधीन नहीं रहते तो उसका विनाश हो जाता है। अभिमानी अकड़कर उपर की ओर देखता चलता है तो ठोकर खाकर नीचे गिर पड़ता है ।

ऋग्वेद में नम्रतापूर्वक नीचे देखते हुए संभल कर चलने का निर्देश है-

अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।। - ऋग्वेद ८/३३/१६

हे मनुष्य नीचे देख। वैसे भी यदि हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करना हो तो पर्वतारोही की भाँति नीचे देखते हुए एक-एक कदम संभल कर रखते हुए चलना चाहिये।

अकसर अभिमानी अपने अहंकार को सही सिद्ध करने के लिए स्वाभिमान की आड़ लेते हैं लेकिन अमर्यादित काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष जैसी कुत्सित कामनाओं को जन्म देने वाला अभिमान ठीक उसी प्रकार जानलेवा हो जाता है जैसे पागल हो जाने पर स्वामीभक्त कुत्ता। पागल कुत्ते को आत्मरक्षा में मार देना चाहिए, ठीक उसी प्रकार मनुष्य को अपने अमर्यादित अभिमान को नष्ट कर विनम्रता के गुण को अपनाना चाहिए।

६०२ जी एच ५३, सैक्टर २० पंचकूला
चलभाष- ०९४६७६०८६८६

आर्य समाज , नला बाजार, अजमेर का ६१वां स्थापना दिवस सम्पन्न

दिनांक ८ मार्च २०१७ को आर्य समाज, संस्थान, नला बाजार, मून्दड़ी मोहल्ला का ६१ वां स्थापना दिवस पंडित जागेश्वर निर्मल जी एवं पंडित दिनेश शर्मा जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज, पटियाला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर, चौक आर्य समाज, पटियाला का वार्षिक उत्सव एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ ४ अप्रैल से ६ अप्रैल २०१७ तक बहुत ही श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें स्वामी विदेह योगी जी के सारगर्भित प्रवचन हुए एवं पं. उपेन्द्र आर्य ने सुमधुर भजन गाये। - वेद प्रकाश तुली, मंत्री

कला और अभिव्यक्ति की आड़ में भारतीय वीर-वीरांगनाओं का अपमान

कहा जाता है कि किसी देश को भीतर से खोखला करना हो तो उसके इतिहास के गौरवशाली पन्नों को मिटा कर जनता में अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान समाप्त कर दो व्यक्ति का स्वाभिमान अपने आप दम तोड़ देगा और फिर उसके ऊपर ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू करो कि वह सदा आपका ही गुणगान करे। लार्ड मैकाले की शिक्षा व्यवस्था का मूल मंत्र यही तो था जिस कारण पूर्ण स्वावलंबी, सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाने वाला भारत अंग्रेजों के जाते जाते टीचर, प्रोफेसर, लेक्चरर, प्रिंसीपल, उस्ताद, मौलवी इत्यादि तो बहुत सारे दे गए किन्तु आचार्य यानि आचारवान व्यक्तियों का अभाव हो गया। अंग्रेजों के जाने के बाद भी हमारी शिक्षा, संस्कार, स्वाभिमान, इतिहास तथा महापुरुषों की गौरवशाली परम्पराओं को नष्ट करने के कुचक्र आजकल नित नए तरीकों से चलाए जा रहे हैं। कभी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, कभी कला की आजादी, तो कभी खाने की आजादी की आड़ में आजकल नए-नए षड्यंत्र हमारे धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक मान बिन्दुओं पर छद्म हमले कर अपनों को अपनों से ही दूर ले जा रहे हैं। अभी ताजा-ताजा उदाहरण प्रसिद्ध फिल्मकार संजय लीला भंसाली द्वारा निर्माणाधीन फिल्म 'पद्मावती' का है जिसमें राजस्थान के चित्तौड़गढ़ की आन बान और शान की प्रतीक रानी पद्मावती के चरित्र पर उँगली उठाने की कोशिश की गई है।

रावल समरसिंह के बाद उनका पुत्र रतनसिंह चित्तौड़ की राजगद्दी पर बैठा। रतनसिंह की रानी पद्मिनी/पद्मावती की सुन्दरता की ख्याति दूर-दूर तक थी। उसकी इसी सुन्दरता के बारे में सुनकर दिल्ली के तत्कालीन बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी ने पद्मिनी को पाने के लिए चित्तौड़ दुर्ग पर एक विशाल सेना के साथ चढ़ाई कर दी। चित्तौड़ की रक्षार्थ तैनात राजपूत सैनिकों के अदम्य साहस व वीरता के चलते कई महीनों की घेराबंदी व युद्ध के बावजूद जब वह चित्तौड़ के किले में घुस तक नहीं पाया तो उसने एक कुटिल योजना बनाते हुए अपने दूत को राजा रतनसिंह के पास भेजा। सन्देश भेजा कि 'हम तो आपसे मित्रता करना चाहते हैं। रानी की सुन्दरता के बारे में बहुत सुना है सो हमें सिर्फ एक बार रानी का मुँह दिखा दीजिये हम घेरा उठाकर दिल्ली लौट जायेंगे' सन्देश सुनकर रतनसिंह आग-बबूला हो उठे पर रानी पद्मिनी ने इस अवसर पर दूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपने पति रतनसिंह को समझाया कि 'मेरे कारण व्यर्थ ही चित्तौड़ के सैनिकों का रक्त बहाना बुद्धिमानी नहीं है।' मेवाड़ की सेना अल्लाउद्दीन की विशाल सेना के आगे बहुत छोटी थी, इसी कारण रानी ने बीच का रास्ता निकालते हुए कहा कि अल्लाउद्दीन चाहे तो मेरा मुख आईने में देख सकता है। अल्लाउद्दीन भी समझ रहा था कि राजपूत वीरों को हराना बहुत कठिन काम है और बिना जीत के घेरा उठाने से उसके सैनिकों का मनोबल टूटेगा तथा बदनामी भी होगी अतः उसने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया ।

चित्तौड़ के किले में अल्लाउद्दीन का स्वागत रतनसिंह ने अतिथि की तरह किया। रानी पद्मिनी का महल सरोवर के बीचों-बीच था सो दीवार पर एक बड़ा आइना लगाया गया रानी को आईने के सामने बिठाया गया।

आईने से खिड़की के जरिये रानी के मुख की परछाई सरोवर के पानी में साफ दिखाई पड़ती थी वहीं से अल्लाउद्दीन को रानी का मुखारविंद दिखाया गया। सरोवर के पानी में रानी के मुख की परछाई में उसका सौन्दर्य देखकर अल्लाउद्दीन चकित रह गया और उसने मन ही मन रानी को पाने के लिए कुटिल चाल चलने की सोच ली। राजपूताना अतिथि परम्परा के तहत जब रतनसिंह अल्लाउद्दीन को वापस जाने के लिए किले के द्वार तक छोड़ने आये तो अल्लाउद्दीन ने अपने सैनिको को संकेत कर रतनसिंह को धोखे से गिरफ्तार कर लिया और बाद में रतनसिंह की मुक्ति के बदले रानी पद्मावती को सौंपने का प्रस्ताव भेजा। रानी ने भी उसकी कुटिलता का जबाव कूटनीति से देकर सन्देश भेजा कि- 'मैं मेवाड़ की महारानी अपनी सात सौ दासियों के साथ आपके सम्मुख उपस्थित होने से पूर्व अपने पति के दर्शन करना चाहूँगी यदि आपको मेरी यह शर्त स्वीकार है तो मुझे सूचित करें।' रानी का ऐसा सन्देश पाकर कामुक अल्लाउद्दीन की खुशी का ठिकाना न रहा और प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

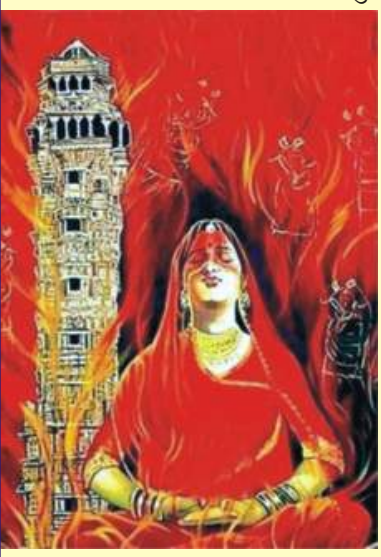

उधर रानी ने अपने काका गोरा व भाई बादल के साथ रणनीति तैयार कर सात सौ डोलियाँ तैयार करवाईं। इन डोलियों में हथियार बंद राजपूत वीर सैनिकों को बिठाकर छंटे हुए योद्धाओं को कहारों के वेश में भेज दिया। इस तरह पूरी तैयारी कर वह वीर रानी अल्लाउद्दीन के शिविर में अपने पति को छुड़ाने हेतु चली। उसकी डोली के साथ गोरा व बादल जैसे युद्ध कला में निपुण वीर भी थे। अल्लाउद्दीन व उसके सैनिक रानी के काफिले को दूर से देख रहे थे। पालकियाँ अल्लाउद्दीन के शिविर के पास आकर जैसे ही रुकीं, उनमें से राजपूत वीर अपनी तलवारें लहराते हुए बाहर निकले और यवन सेना पर अचानक टूट पड़े। परिणामतः अल्लाउद्दीन की सेना हक्की बक्की रह गयी और गोरा, बादल ने तत्परता से अपने राजा को अल्लाउद्दीन की कैद से मुक्त कर सकुशल चित्तौड़ के दुर्ग में पहुँचा दिया। इस हार से अल्लाउद्दीन बहुत लज्जित हुआ और उसने अब चित्तौड़ विजय करने की ठान ली। आखिर उसके छः माह से ज्यादा चले घेरे व युद्ध के कारण किले में खाद्य सामग्री का अभाव हो गया। तब राजपूत सैनिकों ने केसरिया बाना पहन कर जौहर और शाका करने का निश्चय किया। जौहर के लिए गोमुख के उत्तर वाले मैदान में एक विशाल चिता का निर्माण किया गया। रानी पद्मिनी के नेतृत्व में १६००० राजपूत रमणियों ने गोमुख में स्नान कर अपने सम्बन्धियों को अन्तिम प्रणाम कर जौहर चिता में प्रवेश किया। थोड़ी ही देर में देवदुर्लभ सौंदर्य अग्नि की लपटों में स्वाहा होकर कीर्ति कुन्दन बन गया। जिसकी कीर्ति गाथा आज भी अमर है और सदियों तक आने वाली पीढ़ी को गौरवपूर्ण आत्म बलिदान की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

फ्रांस के एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने अपनी भारत यात्रा के दौरान राजस्थान भ्रमण के बाद लिखा था 'राजस्थान की धरती पर पाँव रखने का साहस नहीं होता... पता नहीं पाँव के नीचे किस वीर-वीरांगना का थान (समाधि) हो।' वास्तव में राजस्थान के सोने सी चमकती बालू रेत के हर एक कण कण में एक वीरगाथा लिखी है। चित्तौड़ की ऐसी महान् विभूतियों के अपमान पर भी यदि कोई कहे कि राजपूतों को अपना खून काबू में रखना चाहिए तो यही कहा जाएगा कि वह बुद्धू या तो राजस्थान की धरती से परिचित नहीं है या फिर जानबूझ कर कोई षड्यंत्र कर रहा है। हालांकि हिन्दू समाज कभी भी किसी प्रकार की हिंसा या कानून के उल्लंघन में कभी विश्वास नहीं रखता किन्तु आखिर कब तक वह सहन करेगा? जब कोई माँ दुर्गा, सरस्वती या भारत माता के नग्न चित्र बनाए या फिर भगवान शंकर को अभद्रता से दौड़ाए, कोई हमारे आस्था स्थल, संतों, सांस्कृतिक मान्यताओं, वीर-वीरांगनाओं, परम्पराओं व धर्म गुरुओं का अपमान करे या सरे आम गौ मांस खाने का दम्भ भरे तो भी?

क्या सभी संवैधानिक मर्यादाओं के पालन की जिम्मेदारी सिर्फ शांति प्रिय हिन्दू समाज की ही है? इतना समझ लेना चाहिए कि अब भारत जाग रहा है और अपने स्वाभिमान की रक्षार्थ संवैधानिक रूप से कदम बढ़ाने में सक्षम है। अतः जहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है वहीं सभी को अपनी धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक धरोहरों तथा पुरातन वीर गाथाओं को संजोकर रखने का भी अधिकार है। आवश्यकता इस बात की है कि कोई किसी के अधिकारों में अतिक्रमण न करे और एक दूसरे का सम्मान कर अपने अधिकारों से अधिक कर्तव्यों का पालन करे।

■■■

- विनोद बंसल (राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप)

महाराणा प्रताप जयन्ती पर विशेष

स्वाभिमानी मेवाड़

– कविवर श्याम नारायण पाण्डेय –

यह एकलिंग का आसन है
इस पर न किसी का शासन है।
नित सिंह कर रहा कमलासन है
यह सिंहासन सिंहासन है।। १।।

यह सम्मानित अधिराजों से
अर्चित है राज-समाजों से।
इसके पद-रज पोंछे जाते
भूपों के सिर के ताजों से।। २।।

इसकी रक्षा के लिए हुई
कुबार्नी पर कुबार्नी है।
राणा! तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। ३।।

खिलजी-तलवारों के नीचे
थरथरा रहा था अवनी-तल।
वह रत्नसिंह था रत्नसिंह
जिसने कर दिया उसे शीतल।। ४।।

मेवाड़-भूमि-बलि वेदी पर
होते बलि शिशु रनिवासों के।
गोरा-बादल-रण-कौशल से
उज्ज्वल पन्ने इतिहासों के।। ५।।

जिसने जौहर को जन्म दिया
वह वीर पद्मिनी रानी है।
राणा तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। ६।।

मूंजा के सिर के शोणित से
जिसके भाले की प्यास बुझी।
हम्मीर वीर वह था जिसकी
असि वैरी-उर कर पार जुझी।। ७।।

प्रण किया वीरवर चूड़ा ने
जननी-पद-सेवा करने का।
कुम्भा ने भी व्रत ठान लिया।
रत्नों से अंचल भरने का।। ८।।

यह वीर-प्रसविनी वीर-भूमि
रजपूती की रजधानी है।
राणा! तू इसकी रक्षाकर
यह सिंहासन अभिमानी है।। ९।।

जयमल ने जीवन-दान किया।
पत्ता ने अर्पण प्राण किया।
कल्ला ने इसकी रक्षा में
अपना सब कुछ कुर्बान किया।। १०।।

सांगा को अस्सी घाव लगे
मरहम पट्टी थी आँखों पर।
तो भी उसकी असि बिजली सी
फिर गई छपाछप लाखों पर।। ११।।

अब भी करुणा की करुण-कथा
हम सबको याद जबानी है।
राणा! तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। १२।।

क्रीड़ा होती हथियारों से
होती थी केलि कटारों से।
असि-धार देखने को उँगली
कट जाती थी तलवारों से।। १३।।

जावरमाला के गहर में
अब भी तो निर्मल पानी है।
राणा! तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। १८।।

उसके चरणों को चूम लिया
कर लिया समर्चन लाखों ने।
टकटकी लगा उसकी छवि को
देखा कजल की आँखों ने।। २३।।

हल्दी-घाटी का भैरव-पथ
रंग दिया गया था खूनों से।
जननी-पद-अर्चन किया गया
जीवन के विकच प्रसूनों से।। १४।।

चूड़ावत ने तन भूषित कर
युवती के सिर की माला से।
खलबली मचादी मुगलों में
अपने भीषण तम भाला से।। १६।।

सुनता हूँ उस मरदाने की
दिल्ली की अजब कहानी है।
राणा! तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। २४।।

अब तक उस भीषण घाटी के
कण-कण की चढ़ी जवानी है!
राणा! तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। १५।।

घोड़े को गज पर चढ़ा दिया
'मतमारो' मुगल-पुकार हुई।
फिर राजसिंह-चूड़ावत से
अवरंगजेब की हार हुई।। २०।।

तुझ में चूड़ा सा त्याग भरा
बापा-कुल का अनुराग भरा।
राणा-प्रताप सा रग-रग में
जननी-सेवा का राग भरा।। २५।।

भीलों में रण-झंकार अभी
लटकी कटि में तलवार अभी।
भोलेपन में ललकार अभी
आँखों में हैं अंगार अभी।। १६।।

वह चारुमती रानी थी
जिसकी चेरि बनी मुगलानी है।
राणा! तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। २१।।

अगणित-उर-शोणित से सिञ्चित
इस सिंहासन का स्वामी है।
भूपालों का भूपाल अभय
राणा-पथ का तू गामी है।। २६।।

गिरिवर के उन्नत-शृंगों पर
तरु के मेवे आहार बने।
इसकी रक्षा के लिए शिखर थे
राणा के दरबार बने।। १७।।

कुछ ही दिन बीते फतहसिंह
मेवाड़-देश का शासक था।
वह राणा तेज उपासक था
तेजस्वी था अरि-नाशक था।। २२।।

दुनिया कुछ कहती है सुन ले
यह दुनिया तो दीवानी है।
राणा! तू इसकी रक्षा कर
यह सिंहासन अभिमानी है।। २७।।

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

पहली बार नवलखा महल आर्ट गैलरी देखने का सुअवसर मिला, बहुत ही रोचक एवं नई शिक्षाप्रद जानकारियाँ मिली जो जीवन में नई ऊर्जा एवं गतिप्रदान करेगी, बहुत ही शानदार एवं सुन्दर है। धन्यवाद!

– सोहनलाल सुवालका, रंगकर्मी एवं फिल्म कलाकार, सवीनाखेड़ा, उदयपुर

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने विचारों और सद्कर्मों से आज भी हमारे समक्ष अक्षुण्ण हैं। अनुयायियों द्वारा इनकी संस्कृति को कायम रखना और आगे बढ़ना बहुत अच्छी बात है। इससे सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने में मदद मिलेगी। संस्था की रख-रखावट और साफ-सफाई अच्छी है।

– डॉ. राम रनेश सिंह, आकाशवाणी, पटना (बिहार)

'ईश्वर का विचित्र संसार'

यह संसार किसने, क्यों, कब व किसके लिए बनाया, इसका उत्तर न तो आज के वैज्ञानिकों के पास है और न ही संसार के वेदेतर किसी मत-मतान्तर के पास। इसका उत्तर वेद और वैदिक साहित्य में मिलता है जिसका ज्ञान ऋषि दयानन्द सरस्वती ने अपने उपदेशों व ग्रन्थों के माध्यम से ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें व नौवें दशकों में संसार को व मुख्यतः भारत के लोगों को कराया था। ऋषि दयानन्द का उत्तर किसी कल्पना व अनुमान पर आधारित नहीं है अपितु वह ईश्वरीय ज्ञान वेद और वेदानुकूल शास्त्रों सहित युक्ति व तर्कों के आधार पर भी पुष्ट है। इसके अनुसार यह संसार ईश्वर ने बनाया है। वेद और ऋषि दयानन्द के अनुसार ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। ईश्वर सर्वज्ञ भी है। उसने सभी प्राणियों के शरीरों में विद्यमान जीवात्माओं के पूर्व जन्मों के कर्मों के फल प्रदान करने के लिए इस संसार को रचा है। सृष्टि की रचना ईश्वर ने कब की, इसका उत्तर भी वैदिक मत से मिलता है और वह अवधि १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार ११७ वर्ष है। इसको विस्तार से जानने के लिए वैदिक साहित्य को देखा जा सकता है। सृष्टि को ईश्वर ने क्यों बनाया? इसका उत्तर है जीवों को उनके कर्मानुसार फल प्रदान करने के लिए। इसी उत्तर में ईश्वर ने सृष्टि किसके लिए बनाई का उत्तर भी आ जाता है। ईश्वर ने यह सृष्टि जीवों के लिए ही उनके जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों के फलों का भोग कराने व नये कर्मों को करने का अवसर देकर उन्हें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कराने के लिए बनाई है। ईश्वर की इस व्यवस्था के अनुसार पुरानी जीवात्मायें मोक्ष की अवधि पूरी होने पर इस संसार में आती रहती हैं और इस संसार की जीवात्मायें वेदानुसार जीवन व्यतीत कर मुक्ति को प्राप्त होकर मोक्ष प्राप्त करती रहती हैं। यह जन्म व मोक्ष का चक्र ही इस सृष्टि की उत्पत्ति, क्यों व किसके लिए का उत्तर है।

ईश्वर ने यह संसार वेदानुसार जीवन व्यतीत करने के लिए बनाया था। विगत १.९६ अरब वर्षों के सृष्टिकाल में आज से लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ जिसके कारण देश से ज्ञान व विज्ञान नष्ट हो गया। सामाजिक व्यवस्थायें भी ध्वस्त हो गईं। इसके परिणामस्वरूप भारत सहित सारे संसार में अज्ञानान्धकार फैल गया। वेद विलुप्त हो गये। वेदों के विद्वान् भी न रहे। वेदों का स्थान मत-मतान्तरों व उनके अविद्याजन्य ग्रन्थों ने ले लिया जो आज से कोई चार सौ, कोई लगभग चौदह सौ और एक मत लगभग दो हजार वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया। इससे पूर्व भी लगभग २,५०० वर्ष पूर्व बौद्ध और जैन मत अस्तित्व में आ चुके थे। महाभारत काल के बाद क्योंकि देश व विश्व में अज्ञानान्धकार फैल गया था, अतः महाभारत काल के बाद फैले मतों में भी अज्ञान की मात्रा विद्यमान है। यह बात अलग है कि न तो मत-मतान्तरों के आचार्य अपनी अविद्या पर विचार करते हैं और न अन्यों के द्वारा कहने पर ही उस पर विचार कर उसका निराकरण करते हैं। यह भी ईश्वर के संसार की एक विचित्रता ही है। वेद सन्देश देते हैं कि सभी मतों व मनुष्यों को सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में तत्पर रहना चाहिये, परन्तु कोई भी मत, भारतीय व विदेशों में आविर्भूत, इस नियम का पालन करता हुआ दिखाई नहीं देता। सबका प्रयास यही दीखता है कि अपने अपने मत की अविद्या को तर्क व कुतर्क करके विद्या बताया जाये अथवा मौन रखा जाये। मत-मतान्तरों के अनुयायियों में इतनी विद्या नहीं होती कि वह अपने अपने मत की अविद्या व अज्ञान का विरोध करें। उन्हें मतों के आचार्य की सजा व अन्य प्रकार से अपने जीवन का खतरा होता है। इसी कारण यह अविद्या दूर होने के स्थान पर सर्वत्र विद्यमान है। यह बात तब है जब कि महर्षि दयानन्द ने पूर्वाग्रहों व पक्षपात से मुक्त होकर सभी मतों व उनके अनुयायियों के कल्याण के लिए उन मतों की अविद्या व गलत परम्पराओं का थोड़ा थोड़ा ज्ञान करा दिया था। आश्चर्य है कि बड़ी मूर्तिपूजा करने वाले छोटी मूर्ति पूजा करने वालों का विरोध करते हैं और उनके लिए अमानवीय दण्डों का प्रावधान भी करते हैं। यह प्रक्रिया समाप्त होकर मत-मतान्तरों द्वारा सत्य का ग्रहण होना सम्भव नहीं दीख रहा है।

संसार की इस विचित्रता को ईश्वर भी देख रहा है। वह भी चाहता है कि लोग ईश्वर प्रदत्त बुद्धि का प्रयोग कर अपनी अपनी अविद्या को दूर करें और उसके ज्ञान वेदों के आधार पर अपने अपने मतों का सुधार करें। ईश्वर ने जीव को स्वतन्त्र

बनाया है। जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है। यदि ईश्वर जीवात्मा को किसी अच्छे कार्य के लिए बाध्य करे तो यह जीव की स्वतन्त्रता के अधिकार में बाधा होगी जिसे ईश्वर नहीं करता और इसी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग कर जीव असत्य में प्रवृत्त हो गया है। आज स्थिति यह बन गई है कि मनुष्य ने ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को भुलाकर उसका नकली वा अयथार्थ स्वरूप गढ़ लिया है। इसका कारण अविद्या ही है। इस अविद्याजन्य अयथार्थ स्वरूप को ही देश व संसार के लोग मान रहे हैं। आस्तिक लोगों के इन कल्पित कृत्यों से सन्तुष्ट संसार की एक बहुत बड़ी जनसंख्या असन्तुष्ट होकर नास्तिक हो गई है अर्थात् उसने ईश्वर के अस्तित्व, उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित कृत्रिम धर्म का भी त्याग कर दिया है। इसका यह परिणाम हुआ है कि नास्तिक भी आज कर्मों की पवित्रता पर ध्यान नहीं देते और मांसाहार आदि नाना प्रकार के अनुचित कर्म करते रहते हैं जिनका परिणाम वा फल उन्हें ईश्वर की व्यवस्था से कालान्तर में नाना दुःखों के रूप में अवश्य मिलेगा।

ईश्वर के संसार में सबसे बड़ी विचित्रता यह है कि सृष्टि के

आरम्भ में प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेद के उपलब्ध होते हुए भी संसार के लोग उसे स्वीकार नहीं कर रहे हैं। वेदों को स्वीकार न करने का यह परिणाम हुआ है कि लोगों को अपने कर्तव्य व अकर्तव्यों का ज्ञान ही नहीं है। मनुष्य के कर्तव्यों वा अकर्तव्यों का विधान वेदों में है। महर्षि दयानन्द ने वेदों के अनुसार सभी गृहस्थ मनुष्यों व अन्यों के लिए वेदों के आधार पर कर्तव्य-अकर्तव्यों का विधान पंचमहायज्ञविधि और संस्कार विधि आदि अपने अनेक ग्रन्थों में किया है। जब तक मनुष्य वेदों को भली प्रकार से स्वीकार नहीं करेंगे, उन्हें अपने यथार्थ कर्तव्यों का बोध नही हो सकता। इसका परिणाम यह होगा कि वेदविरुद्ध कर्म करने व सभी वेद विहित करणीय कर्मों को न करने के कारण उन्हें अपने कर्मों के अनुसार सुख-दुःख रूपी कर्मों के फलों को कालान्तर में भोगना होगा। कर्तव्य व अकर्तव्यों का ज्ञान न होने के कारण ही संसार के प्रायः सभी व अधिकांश मनुष्य दुःखी देखे जाते हैं। आज संसार में सर्वत्र अज्ञान, अविद्या, अशिक्षा, अन्याय, शोषण, मांसाहार, हिंसा, भ्रष्टाचार, खानपान के दोष, असमानता, छुआछूत, मूर्तिपूजा, जन्मना जातिवाद, निराकार ईश्वर की योग की रीति से उपासना न करना आदि अनेकानेक दोष देखने में आ रहे हैं। यत्र तत्र युद्ध भी हो रहे हैं। हर देश युद्ध की तैयारी कर रहा है। कोई देश दूसरे देश की भूमि हथियाने के षड्यन्त्र कर रहा है तो कोई अन्यों का धर्म परिवर्तन कर अपने मत के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि करने में सक्रिय है। यह सब विचित्रतायें ईश्वर के ससार में सर्वत्र देखने को मिल रही हैं।

आज संसार में वैदिक व्यवस्था नहीं है। प्रकृति का अन्धाधुन्ध दोहन हो रहा है जिससे पर्यावरण की रक्षा खतरे में पड़ गई है। वायु प्रदूषण से नाना प्रकार के रोग हो रहे हैं। कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा आदि अनेक रोगों के कारण मनुष्य अल्पायु का शिकार हो रहे हैं। यदि लोग वेदों को अपना लेते तो शुद्ध पर्यावरण होता, वायु शुद्ध होती, सर्वत्र एक समान पद्धति से ईश्वरोपासना व अग्निहोत्र यज्ञ से रोगों का नाश व सबको अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होता। लोग योगाभ्यास करके अपना जीवन तनावमुक्त कर दीर्घजीवी होते। संसार में हिंसा न होने से सर्वत्र खुशहाली का वातावरण होता। अकाल, सूखा, अतिवृष्टि, महामारी व भूकम्प आदि जैसी आपदायें न होतीं वा कम होतीं। वैदिक व्यवस्था का सर्वत्र प्रचलित न होना ही हमें ईश्वर के संसार की विचित्रता अनुभव होती है। हमें लगता है कि यदि संसार को दुःखों से मुक्त होकर सर्वत्र सुख व शान्ति की स्थापना करनी है तो मत-मतान्तरों व उनकी अविद्या को त्याग कर सत्य व वेद के मार्ग पर आना ही होगा। बिना इसके समस्त विचित्रतायें समाप्त होकर सर्वत्र समानता, एक मत, एक विचार, एक सुख-दुःख का होना सम्भव नहीं है। संसार के लोगों को महर्षि दयानन्द द्वारा विश्व शान्ति का जो मार्ग सत्यार्थप्रकाश और अन्य ग्रन्थों में सुझाया गया है, उसका अध्ययन कर उसे अपनाना चाहिये। इसी में सबका हित व कल्याण है। इससे ही संसार की सभी विचित्रतायें व अनिष्ट दूर होंगे।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चुक्खूवाला-२ देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९९८५११

धर्म पर मरने वाले आर्य समाजियों का जीवन परिचय

खुशहाल चन्द आर्य

वैसे तो आर्य समाजियों की देश, धर्म व समाज के लिये मरने वालों की काफी बड़ी शृंखला है, जिनमें क्रान्तिकारियों में भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द व लाला हरदयाल एम.ए. आदि अनेकों आर्य समाजियों ने देश के लिये अपने प्राण न्यौछावर कर दिए या जेलों में रहकर कठिन यातनाएँ सहीं। वैदिक धर्म की रक्षा व वैदिक धर्म को फैलाने के लिये तथा शुद्धि कार्य को करने के लिए भी आर्य समाजियों के बलिदान कोई कम नहीं हैं। सबसे पहले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने ही वैदिक धर्म को फैलाने के लिए तथा सत्य से विचलित न होने के कारण अपने प्राण दिए, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। प्रत्येक स्वाध्यायशील व्यक्ति उनके बलिदान को जानता है। स्वामी जी के बाद भी पाँच महापुरुषों ने अपने प्राण, वैदिक धर्म की रक्षा व फैलाने के लिए हसँते-हँसते समर्पित किये, जिनमें से पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द व महाशय राजपाल को काफी स्वाध्यायशील व्यक्ति जानते हैं, परन्तु दो आर्य समाजी जिनके नाम श्रीयुत् तुलसी राम व म. रामचन्द्र हैं जिनको बड़े स्वाध्यायशील व्यक्ति भी नहीं जानते, उनके साथ हम बड़ा अन्याय कर रहे हैं। उन बलिदानों की जानकारी सब पाठकों को हो, इस उद्देश्य से मैंने यह लेख लिखा है। उन पाँच बलिदानियों का जीवन परिचय इस भाँति है:-

१. पं. लेखराम:- पं. लेखराम आर्य मुसाफिर, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के एक अत्यन्त उत्साही और निर्भीक उपदेशक थे। उन्होंने उर्दू भाषा में वैदिक धर्म सम्बन्धी बहुत सी पुस्तकें लिखीं और मुसलमानों की पुनर्जन्मादि विषयक शंकाओं का बहुत अच्छा उत्तर दिया। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की एक उत्तम जीवनी भी लिखी। उनके निर्भयता पूर्वक वैदिक धर्म प्रचार तथा शुद्धि के कार्यों से कुछ मुसलमान चिढ़ गये और एक मतान्ध मुसलमान ६ मार्च १८९७ को पं. लेखराम जी के पास आया और शुद्ध होने की इच्छा प्रकट की साथ ही बीमार होने का बहाना भी किया। उस समय पण्डित जी महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखकर थकावट हटाने के लिए अंगड़ाई ले रहे थे, उस दुष्ट व्यक्ति ने मौका पाकर अपने काले कम्बल में छिपाए छुरे से उन पर वार कर दिया जिससे घायल होकर उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के बाद पं. लेखराम का धर्म के लिए पहला बलिदान हुआ।

२. इनके बाद पंजाब प्रान्त के फरीदकोट रियासत के निवासी श्रीयत् तुलसीराम जी नामक सज्जन का बलिदान स्मरण रखने योग्य है। यह महाशय स्टेशन मास्टर होते हुए भी समय निकाल कर धर्म प्रचार में लगे रहते थे। जैन मत का उन्होंने अच्छी प्रकार अध्ययन किया था और उनके ग्रन्थों व सिद्धान्तों की वे निर्भय होकर समालोचना किया करते थे, जिससे चिढ़कर कुछ मतान्धों ने उन्हें एक दिन शाम के समय सड़क पर जाते हुए घेर लिया और मिर्च मिली रेत उनके ऊपर फेंककर तथा डण्डे मारकर उन्हें मार डाला। यह एक आर्य समाजी का धर्म के लिए दूसरा बलिदान था।

३. इसके बाद महाशय रामचन्द्र नामक एक जम्बू प्रान्तवासी सज्जन का बलिदान, जो रियासत में खजांची का काम करते थे, सन् १९२३ में हुआ। यह महाशय मेघ नामक अछूत कहलाने वाली जाति के उद्धार के लिए बहुत प्रयत्न करते थे। इनके प्रयास से दूसरे लोगों ने भी उस विषय में खास कोशिश शुरू कर दी थी। पर कई राजपूतों को यह बात बुरी लगी, उन्होंने म. रामचन्द्र पर लाठियों से वार कर दिया और उन्हें मार कर ही छोड़ा। इस प्रकार दलितोद्धार और धर्म-प्रचार का पवित्र कार्य करते हुए इनका बलिदान अपने ही भूले-भटके राजपूत भाईयों के हाथों केवल २६ वर्ष की उम्र में हुआ। इनके बलिदान का परिणाम यह हुआ कि दलितोद्धार का काम खूब जोर-शोर से होने लगा। जिन राजपूत भाईयों ने म. रामचन्द्र को मारा था, वे खुद आर्य समाज के बड़े प्रेमी बन गये और इस तरह बीस हजार के लगभग मेघों को थोड़े ही समय में आर्य समाज में शामिल कर लिया गया।

४. यह बलिदान पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द जी का दिल्ली में

२३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक मतान्ध मुसलमान के हाथों हुआ था। इसका विशेष कारण स्वामी जी का शुद्धि-विषयक आन्दोलन को जोर शोर से चलाना था, स्वामी जी के पास इस तरह के बहुत पत्र भी आते थे जिनमें उन्हें शुद्धिकार्य को बन्द करने और ऐसा न करने पर मारे जाने की धमकी दी जाती थी, पर स्वामी श्रद्धानन्द जी एक निर्भीक, धर्मवीर संन्यासी थे। वे ऐसी धमकियों की जरा भी परवाह न करते हुए धर्म का काम किए चले जाते थे। उनके प्रयत्न से एक लाख से अधिक मलकाने राजपूत, जो बहुत समय पूर्व मुसलमान बनाए जा चुके थे, फिर आर्य धर्म (हिन्दू धर्म) में दीक्षित किए गये। २५ मार्च १९२६ को असगरी बेगम को उसकी इच्छानुसार शुद्ध करके शान्ति देवी नाम दिया गया। इससे मतान्ध मुसलमान बहुत चिढ़े और श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा उनके साथियों पर जबरदस्ती शुद्ध करने का मुकदमा चलाया। इस मुकदमे का फैसला श्री स्वामी जी के पक्ष में हुआ। इससे मुसलमानों का क्रोध और भी बढ़ गया। अन्त में अब्दुल रशीद नामक एक मुसलमान श्री स्वामी जी के मकान पर २३ दिसम्बर सन् १९२६ को आया और पानी पीने को माँगा। पानी पी कर उसने स्वामी जी पर चार गोलियाँ चलाईं और उनके पवित्र जीवन का अन्त कर दिया। यह महर्षि दयानन्द के बाद चौथा बलिदान था।

५. यह बलिदान लाहौर के एक प्रसिद्ध आर्य पुस्तकालय के संचालक महाशय राजपाल जी का ६ अप्रैल १९८९ को एक इल्मदीन नामक मतान्ध मुसलमान के हाथों लाहौर में हुआ। इसका कारण यह था कि महाशय राजपाल जी द्वारा प्रकाशित 'रंगीला रसूल' नामक पुस्तक से मुसलमान चिढ़े हुए थे। कहानी इस भाँति है कि मुसलमानों ने भगवान श्रीकृष्ण और महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध के कुछ अश्लील पुस्तकें मन घड़न्त छाप दी थीं। आर्य समाज के एक महान् विद्वान् पं. चमूपति जी ने इनके बदले में मोहम्मद साहब का पूरा जीवन पढ़कर 'रंगीला रसूल' नामक पुस्तक छापी जो उन मनघड़न्त अश्लील पुस्तकों का एक सही उत्तर था। इसका प्रकाशन

महाशय राजपाल जी ने यह कह कर किया कि मैं प. चमूपति जी का नाम न छापते हुए इस पुस्तक का प्रकाशन करूँगा और उन्होंने प्रकाशित कर दी। मुसलमानों के बहुत कहने पर भी कि आप इस पुस्तक के लिखने वाले का नाम बतला दो तो हम आपको कुछ नहीं कहेंगे परन्तु महाशय जी ने विद्वान् का नाम नहीं बतलाया और वे एक मतान्ध मुसलमान युवक के हाथों मरकर मोक्षधाम को प्राप्त हुए। यह महर्षि दयानन्द के बाद धर्म के लिए पाँचवा बलिदान था। यह एक विचित्र ढंग का बलिदान था जिसमें एक बलिदानी, एक बड़े वैदिक विद्वान् के प्राण बचाने के लिए अपने प्राण देकर अमर हो गये।

मैं इन सभी बलिदानी महापुरुषों को नमन करते हुए श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

द्वारा गोविन्द राम आर्य एंड संस
१८० महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला,
कोलकात्ता ७०००७

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ २१ पर देखें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य	भंवरलाल गर्ग	डॉ.अमृत लाल तापड़िया
मंत्री-न्यास	कार्यालय मंत्री	उपमंत्री-न्यास

गौ और सत्य ज्ञान (वेद ज्ञान) की संसार के लिए उपयोगिता

अथर्ववेद ५.१८ के अनुसार

अथर्ववेद सूक्त ५.१८, ऋषिः- मयोभूः -पृथिवी पर सुख शांति, देवताः ब्रह्मगवी, ब्रह्म -भृ धातु से मन प्रत्यय लगा कर ब्रह्म शब्द बना है। 'भ्रीयते जगदस्मिन' जो संसारका अधिकरण है, अथवा 'भ्रीयते जगदनेनय' जो संसार को धारण करने वाली है वह गवि- गौ । ब्रह्मगवि- गौ जो संसार को धारण करती है, मयोभू- भूमि पर आनन्द की दृष्टि से गोमांस क्यों खाना मना है? इसलिए क्योंकि गाय से ही विश्व में सब जगह खुशहाली रहती है-

नैतां ते देवा अददुस्तुभ्यं नृपते अत्तवे ।
मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम् ।। - अथर्व ५/१८/१

(नृपते!) हे राजा (ते देवाः) उन प्रसिद्ध देवताओं ने (एतां) विद्वत्जनों के परामर्श से जाना कि मूक गौ माता और ब्राह्मणों द्वारा वेद ज्ञान (तुभ्यं) तुझे (अत्तवे) खा डालने के लिए (न अददुः) नहीं दिए हैं। इसलिए (राजन्य) हे क्षत्र- शक्ति युक्त राजा! तू (ब्राह्मणस्य) कभी (अनाद्यां) कभी न खाने योग्य और कभी भी न खा जा सकने वाली (गां) तथा विद्वानों के वेद ज्ञान और सत्य के उपदेश अर्थात् प्रजा की वाणी और गौ को (मा जिघत्स) हिंसा से खतम कर डालने की इच्छा मत कर ।

अक्षद्रुग्धो राजन्यः पाप आत्मपराजितः ।
स ब्राह्मणस्य गामद्यादद्य जीवानि मा श्वः ।। - अथर्व ५/१८/२

स्वार्थान्ध जुआरी के समान गो और ब्रह्मज्ञान की रक्षा और न्यायोचित कार्य न करके जन-विद्वेष करने वाला राजा पाप करता है। अपनी करनी से आप ही पराजित हो जाता है। वर्तमान का आज तो उसका है, भविष्य का कल उस का नहीं है।

आविष्टिताघविषा पृदाकूरिव चर्मणा ।
सा ब्राह्मणस्य राजन्य तृष्टैषा गौरनाद्या ।। - अथर्व ५/१८/३

ऐसे राष्ट्र में विषधारी सांप बिच्छू (असामाजिक असंतुष्ट, अलगाव वादी जैसे तत्व) एक चमड़े की थैली जैसे में इकट्ठे होते छिपे रहते हैं अवसर पा कर बाहर निकलते रहते हैं, उपद्रव मचाते हैं परन्तु अदृश्य रहने के कारण कभी पकड़ाई में नहीं आते।

निर्वै क्षत्रं नयति हन्ति वर्चोऽग्निरिवारब्धो वि दुनोति सर्वम् ।
यो ब्राह्मणं मन्यते अन्नमेव स विषस्य पिबति तैमातस्य ।।
- अथर्व ५/१८/४

मूक गौ और जनता की आवाज को शस्त्र शक्ति से दमन करने वाला राजा जो ब्रह्मगवी को अपना भोजन बनाता है वह जहरीले नाग का विष पीता है। अपमानित बुद्धिजीवी उसे निस्तेज कर देते हैं और जनता में भड़की विद्रोह की अग्नि उसे सन्तप्त कर देते हैं।

य एनं हन्ति मृदुं मन्यमानो देवपीयुर्धनकामो न चित्तात् ।
सं तस्येन्द्रो हृदयेऽग्निमिन्ध उभे एनं द्विष्टो नभसी चरन्तम् ।।
- अथर्व ५/१८/५

जो धन लोलुप गौ और जनता को मृदु मानकर उस का अहित करता है, उसके हृदय में शोकाग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है, और पृथ्वीलोक और द्युलोक के सब निवासी उससे द्वेष करते हैं।

न ब्राह्मणो हिंसितव्योऽग्निः प्रियतनोरिव ।
सोमो ह्यस्य दायाद इन्द्रो अस्याभिशस्तिपाः ।। - अथर्व ५/१८/६

वेद ज्ञान और गौ सेवा के संस्कार हिंसा के योग्य नहीं होते। वे तो कुशल राष्ट्र को चलाने वाली ऊर्जा प्रदान करते हैं। राष्ट्र में ज्ञान और अच्छे संस्कारों के बढ़ाने के लिए राजा को वेदों और गौ के ज्ञान के सम्वर्धन के लिए सोमयाग करने चाहिए ।

शतापाष्ठां नि गिरति तां न शक्नोति निःखिदम् ।
अन्नं यो ब्रह्मणां मल्वः स्वाद्वद्मीति मन्यते ।। - अथर्व ५/१८/७

मलिन आत्मा राजा जो वेद ज्ञान और गोसेवा की अवहेलना कर के प्रजा के शोषण को और गौ मांस को स्वादिष्ट भोज्य समझते हैं वे अज्ञान से सेंकडों विपत्तियों को मानो निगल रहे

हैं। वे असह्य दुर्गति को प्राप्त होते हैं।

जिह्वा ज्या भवति कुल्मलं वाङ् नाडीका दन्तास्तपसाभिदिग्धाः।
तेभिर्ब्रह्मा विध्यति देवपीयून्हृद्बलैर्धनुर्भिर्देवजूतैः।।

– अथर्व ५/१८/८

तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा हेतिमन्तो यामस्यन्ति शरव्यां न सा मृषा।
अनुहाय तपसा मन्युना चोत दूरादव भिन्दन्त्येनम्।।

– अथर्व ५/१८/६

गौ और प्रजा की मूक वाणी, विद्वत्ता, तप और मन्यु से प्रेरित तेजयुक्त तीर बनकर अपने शत्रुरूप राजा को वेधते हैं। तपस्या, मन्यु से प्रेरित अदृष्ट तीक्ष्ण अस्त्र भावनाहीन राज्ञ व्यवस्था को दूर से ही अपने लक्ष्य पर जा कर उसे बींध देते हैं।

ये सहस्रमराजन्नासन्दशशता उत।
ते ब्राह्मणस्य गां जग्ध्वा वैतहव्याः पराभवन्।। – अथर्व ५/१८/१०

हजारों राजा थे, सेंकडों ने राज किया था। जिन्होंने ब्रह्मगवी

गौ और वेद वाणी का भक्षण किया। अब उन सब का कोई नामलेवा भी नहीं है।

गौरेव तान्हन्यमाना वैतहव्याँ अवातिरत्।
ये केसरप्राबन्धायाश्चरमाजामपेचिरन्।। – अथर्व ५/१८/११

हुत हुयी सद्परामर्श के अन्न की हवि से वंचित राजा की प्रबन्ध क्रिया शक्ति का विनाश हो जाता है। राज्ञ का सुचारु प्रबन्ध न कर पाने के कारण उस राजा का राजमुकुट छिन जाता है।

एकशतं ता जनता या भूमिर्व्यधूनुत।
प्रजां हिंसित्वा ब्राह्मणीमसंभव्यं पराभवन्।। – अथर्व ५/१८/१२

गौ और जनता ने सेंकडों ऐसे राजाओं को धूल में मिला दिया जो प्रजा का शोषण कर के स्वयम् भव्य जीवन चाहते थे।

देवपीयुश्चरति मर्त्येषु गरगीर्णो भवत्यस्थिभूयान्।
यो ब्राह्मणं देवबन्धुं हिनस्ति न स पितृयाणमप्येति लोकम्।।

– अथर्व ५/१८/१३

(देवपीयुः) देव भाव का द्वेषी मनुष्य (मर्त्येषु गरगीर्णः चरति, अस्थिभूयान्भवति) लोगों में विष पिये हुए की तरह फिरता है और उसके हाड़ ही हाड़ रह जाता है। (यः) ऐसा जो देवपीयु (देवबन्धुं ब्राह्मण हिनस्ति) दैव भाव के पालक ब्राह्मण और गौ किसी की भी हिंसा करता है (सः पितृयाणं लोकं अपि न एति) वह पितृयान (जिस में पितरों के मार्ग से भौतिक उन्नति के भोग और संयम पूर्वक संतानोत्पत्ति से विस्तार और विकास होता है) उन्नत सभ्य समाज का सदस्य नहीं होता । (देवयान-देवताओं के मार्ग में आध्यात्मिक उन्नति और ब्रह्मचर्य द्वारा आत्मिक तेज बढ़ता है)

इषुरिव दिग्धा नृपते पृदाकूरिव गोपते।
सा ब्राह्मणस्येषुर्घोरा तया विध्यति पीयतः।। – अथर्व ५/१८/१५

हे नृपति (राजा) इस गोरूप पृथ्वी के पालक ब्रह्मवाणी की उपेक्षा एक घोर हिंसक सर्पिणी की तरह डसती है।

देखिये, जो पशु निःसार घास तृण पत्ते फल–फूल आदि खावें और सार दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें, हल गाड़ी में चल के अनेक विध अन्न आदि उत्पन्न कर सब के बुद्धि बल पराक्रम को बढ़ा के नीरोगता करें, पुत्र–पुत्री और मित्र आदि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहाँ बाँधे वहाँ बँधे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहाँ से हटावें वहाँ से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारनेवाले को देखें, अपनी रक्षा के लिए पालन करनेवाले के समीप दौड़कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा।

जिनके मरे पर चमड़ा भी कंटक आदि से रक्षा करे, जंगल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिए दूध देने को नियत स्थान पर नियत समय चले आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन, मन लगावें, जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुख के लिए है, इत्यादि शुभगुणयुक्त सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो (मनुष्य) अपना पेट भर सब संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दुःख देने वाले और पापी जन होंगे ?

(गोकरुणानिधि, महर्षि दयानन्द सरस्वती)

दो अविस्मरणीय यात्राएं

– डॉ. उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के., आर्य रत्न, प्रधान आर्य सभा मॉरीशस

पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी महाराज आचार्यद्वय-श्री यज्ञवीर और श्री योगेश योगी एवं ब्रह्मचारी निखिल जी के साथ दस दिनों की यात्रा पर मॉरीशस पधारे। उन्होंने १३ जनवरी २०१५ को यहाँ की धरती पर पदार्पण किया। वे मात्र मॉरीशस-दर्शन की इच्छा से यहाँ आए थे। किन्तु इस रमणीक द्वीप में पग धरने पर उन्हें उसके दर्शन का समय कम और यहाँ के आर्य समाज मंदिरों तथा मॉरीशस के रेडियो टेलीविजन पर सारगर्भित प्रवचन देने में अधिक समय व्यतीत करना पड़ा। उनकी यात्रा अविस्मरणीय बनकर रह गई।

इतिहास साक्षी है कि स्वामी मंगलानन्द पुरी जी भारत से मॉरीशस पधारे प्रथम संन्यासी थे। वे भी जनवरी मास में ही यहाँ आये थे परन्तु वर्ष था- सन् १९१२ अर्थात् ठीक एक सौ पाँच वर्ष पूर्व। स्वामी मंगलानन्द पुरी जी महाराज देशाटन की अभिलाषा से मॉरीशस टापू में आये थे। उनकी यात्रा का बड़ा ऐतिहासिक महत्व है। भारत लौटने के बाद उन्होंने अपना खट्टा मीठा अनुभव व्यक्त करते हुए अपना यात्रा वृतान्त 'मर्यादा' पत्रिका में प्रकाशित किया। इस यात्रा वृतान्त को प्राप्त करने के लिए श्री प्रह्लाद रामशरण जी को कलकत्ता की यात्रा करके वहाँ के बड़ा बाजार पुस्तकालय से संपर्क करना पड़ा। स्वामी मंगलानन्द पुरी जी लिखते हैं-

'.....इस टापू के कई स्थानों पर रेल द्वारा मैं घूम चुका हूँ, यहाँ की प्राकृतिक शोभा अति मनोहर है। जिधर देखो पहाड़ ही पहाड़ दिख पड़ते हैं, पर वे निस्संदेह वृक्षों, पौधों, जड़ी-बूटियों, फल-फूलों इत्यादि से ऐसे भरे हैं कि

मानो प्रकृति ने इन्हें हरी चादर ओढ़ा रक्खी है। पहाड़ी, झरने और नदियाँ बड़े स्वच्छ निर्मल जल को बहाये समुद्र की ओर चली जाती हैं। सारा टापू गन्ने के खेतों से भरा पड़ा है। खेती यहाँ गन्ने की ही होती है, दूसरी किसी वस्तु (गेहूँ या रूई इत्यादि) की खेती नहीं होती। इसका कारण मैंने पूछा तो यह बतलाया गया कि वर्षा की अधिकता से और वर्ष के अन्य सारे ही ऋतुओं में वर्षा न्यूनाधिक होती रहने से दूसरी कोई वस्तु नहीं उपज सकती। अनेक बार इसकी परीक्षाएं की गईं। अतः हम जिस प्रकार जंजिबार को लवंग का टापू कह सकते हैं उसी प्रकार इस मिरिच को यदि गन्ना या शक्कर (चीनी) का टापू कह दें तो अनुचित न होगा, यद्यपि यहाँ जंजिबार को परमात्मा ने लवंग की वाटिका बना रक्खी है, वहाँ इस मिरिच को उसके बन्दों ने उसकी कृपा से, गन्ना का क्षेत्र बना पाया। यहाँ भी आम का मधुर फल जंजिबार के सदृश साल में ८ या ९ महीने पाया जाता है। जनवरी (पोष, माघ) में आम खाना भारत में असंभव है, पर मैं जिस दिन उतरा, उसी दिन मुझे आम का स्वाद चखाया गया।

भारतीय सर्वप्रकार की शाक-भाजी तरकारियाँ- आलू, गोभी, भिण्डी, अरवी, बैंगन, करेला इत्यादि तथा अनेक फल- अमरूद, नीम्बू, केला, शरीफा इत्यादि सभी यहाँ मिलते हैं- कई भारत से सस्ते और कई कुछ महँगे।

पाठकगण! साधारणतः आपको मैंने मिरिच टापू की सैर करा दी। हाँ, अभी अपने देशियों का वृतान्त सुनना बाकी, पर क्या कहूँ? मैं तो इनके हालात देखकर तथा भारत का मॉरीशस से सम्बन्ध विचार कर के रोता हूँ और कभी हँसता हूँ। अच्छा, आइये आप प्रथम मेरे साथ रो लीजिये फिर कुछ हँस भी लीजियेगा।

साठा उत्तर, अस्सी-अस्सी वर्ष के बूढ़े हिन्दू यहाँ मुझे मिले और उनके आगमन का वृतान्त सुना तो यह ज्ञात हुआ कि सौ में से अस्सी की ऐसी दशा है कि वे केवल धोखे से लाये गये हैं। कलकत्ता तथा अन्य नगरों में कुलियों को भेजने के ऑफिस बने हैं। उनके कार्यकर्ता छलबल से काम लेते हैं। मैं यहाँ पर एक दो के वृतान्त लिखता पर देवयोग से इन्हीं दिनों भारतीय समाचार पत्रों में कानपुर के डीपू में दो अच्छे घराने की लड़कियों को फुसलाकर रख लेने का एक मुकदमा किसी न्यायालय में होने की बात पढ़ी है सो पाठक सोच लें कि यहाँ जितने आये हैं, उन सबको नहीं, तो सौ में से अस्सी को ऐसे ही धोखे दिए गए होंगे। यह कुली भर्ती करने का महकमा भारत में खोलना ही सरकार की भूल थी। अब तो मॉरीशस, नेपाल, इत्यादि कई देशों मे कुली भेजना बन्द हो गया, पर निःसंदेह भारत सरकार को उचित है कि इस महकमे को

तोड़ दे। जिन्हें आदमी की दरकार हो समाचार पत्रों में विज्ञापन दे और पूरा वेतन देकर उन्हें प्राप्त करे जो प्रसन्नतापूर्वक जाना चाहें भेजे जायें।

यह तो हुआ इन भारतीय कुलियों पर दूसरों का अत्याचार। परन्तु इनके निज के कृत्य अर्थात् इनकी सामाजिक, आत्मिक, सदाचारिक और धार्मिक दशा जैसी कुछ मैं पाता हूँ वह अत्यन्त शोचनीय है।

यहाँ पूर्वकाल में फ्रेंच का राज्य होने के कारण इस देश की भाषा एक बिगड़ी हुई फ्रेंच जबान है जिसे किरोल कहा जाता है सो प्रायः ९० प्रति सैंकड़ा यहाँ के जन्मे हुए भारतवासी केवल इसी किरोल भाषा को जानते हैं। यही अब उनकी मातृभाषा है। उनके लिए हिन्दी वैसी ही कठिन और अपिरिचत है जैसे हम लोगों के लिए अंग्रेजी इत्यादि।

हा! क्या इससे बढ़कर शोक का विषय हो सकता है कि आज ये मिरिच देश में आने वाले हिन्दू अपनी हिन्दी मातृभाषा ही को भूल गए। किसी जाति की जातीयता उसकी एक मातृभाषा होने के द्वारा संसार में विद्यमान रह सकती है। जब वही न रह गई तो मुझे कैसे सन्तोष हो? जिस हिन्दी भाषा को भारत की राष्ट्र भाषा बनाने का हम प्रयत्न कर रहे हैं उसे उसके केन्द्र स्थान-काशी प्रयाग आदि के निवासी यहाँ आकर भूल गए। क्या यह महाशोक की बात नहीं है।

हिन्दी भाषा तो इस प्रकार काफूर हुई। केवल कथन मात्र के लिए एक सहारा था कि अच्छा क्या हुआ भाषा भूल गए तो भूल गए, पर हैं तो वे हमारे हिन्दू भाई। दूर देश में बसे रहकर धनधान्य से परिपूर्ण हैं। तो परमात्मा इन्हें सुखी रखे, यथासंभव मातृभूमि हिन्दुस्तान का प्रेम उनमें बना रहे और देश सेवा में दत्तचित्त रहें यही गनीमत है।

पर ऐसा भी नहीं है। 'वे हिन्दू जो यहाँ जन्मे हैं इस टापू को अपना स्वदेश और भारत को दूसरों के ही सदृश विदेश मानते हुए मुझ जैसे नये आने वाले को विदेशी कहते हैं।'

पाठकवृन्द! उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़कर आप इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि स्वामी मंगलानन्द पुरी आत्मग्लानि लिए भारत लौटे। उन्होंने इस देश में हिन्दुत्व और भारतीयता को समाप्त होते पाया। उन्होंने मॉरीशस को एक नया नाम भी दिया- मिरिच टापू।

स्वामी मंगलानन्द पुरी जी से कुछ समय पहले १५ दिसम्बर १९९९ में डॉ. चिरंजीव भारद्वाज जी का सपत्नीक मॉरीशस में आगमन हुआ था। १९१२ में पंडित विश्वनाथ आत्माराम जी और १९१४ में स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज का इस देश में धर्म प्रचारार्थ पदार्पण हुआ। इन तीनों भारतीय विद्वानों ने हिन्दी भाषा में प्रवचन करके हिन्दी का खूब प्रचार

प्रसार किया। कई हिन्दी पाठशालाएँ खोली गईं। उन दिनों कन्याओं को पढ़ाने का रिवाज नहीं था। डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज की सहधर्मिणी, सुमंगली देवी ने कन्याओं को पढ़ाने के लिए पाठशालाएँ खोलीं। वे इस देश में प्रथम महिला थीं जिन्होंने मंच पर खड़े होकर हिन्दी में कई व्याख्यान दिए।

दो वर्ष पश्चात् अर्थात् १९१६ में पंडित काशीनाथ किष्टो के भारत से उच्च शिक्षा प्राप्त करके मॉरीशस लौटने पर धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में एक जबर्दस्त क्रान्ति हुई। गत सौ वर्षों में आर्य समाज आन्दोलन के माध्यम से भारतीय/स्थानीय धर्म प्रचारकों ने स्वामी मंगलानन्द पुरी की निराशा को दूर करके सभी दृष्टियों से एक प्रगतिशील मॉरीशस के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये।

स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज का प्रवास यहाँ अत्यल्प था। इस अल्पकाल में वे मॉरीशस दर्शन से बड़े प्रभावित हुए। यहाँ की प्राकृतिक सुषमा ने उन्हें स्वामी मंगलानन्द पुरी जी के ही समान आनन्द विभोर कर दिया। साफ सुथरी सड़कें और गलियाँ देख वे अति प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने प्रवचनों के दौरान श्रोताओं को बताया कि पहली बार सन् १९७३ में इस टापू की यात्रा की थी। वे सात सौ भारतीयों के साथ यहाँ आयोजित बारहवें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए अकबर नामक पानी जहाज से इस धरती पर उतरे थे। लगभग साढ़े चार दशक बाद उन्हें दोबारा मॉरीशस देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए बताया कि इस अन्तराल में मॉरीशस ने विविध क्षेत्रों में भारी प्रगति की है। उन्होंने इस देश के शासकों और जनता के श्रम को सराहते हुए सबको बधाई दी है।

स्वामी मंगलानन्द पुरी जी भी इस द्वीप के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर अभिभूत हुए थे। परन्तु उन्हें बड़ा खेद इस बात से हुआ था कि इस देश में बसे भारतीय मूल के अधिकांश लोग अपनी भाषा, संस्कृति से वंचित हो गए थे। उन्होंने भारतीयता को समाप्त होते देखा था इसलिए वे दुःखी होकर

स्वदेश लौटे थे।

स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज भी स्वामी मंगलानन्द पुरी के ही अनुरूप मॉरीशस दर्शन की इच्छा लिए यहाँ पधारे। अपने अल्पकाल के प्रवास के दौरान उन्होंने मॉरीशस की राजधानी पोर्टलुई के पास पाई ग्राम स्थित ऋषि दयानन्द संस्थान में आयोजित त्रिदिवसीय प्रवचनों के दौरान आर्य सभा के पंडित पंडिताओं और अनेक शाखा समाजों के प्रधानों, मंत्रियों एवं अन्य अधिकारियों को अपने ज्ञानवर्धक प्रवचनों से प्रभावित किया। उनके प्रथम दिन के प्रवचन से पूर्व आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान जी ने स्वामी जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि वे बड़े ही कर्मनिष्ठ संन्यासी हैं। स्वामी जी महाराज श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय के अधिष्ठाता हैं और इस समय उनकी देखरेख में भारत के विभिन्न प्रान्तों में आठ गुरुकुलों का संचालन हो रहा है।

स्वामी जी का प्रथम प्रवचन वैदिक वाङ्मय के एक संक्षिप्त परिचय पर आधारित है। उन्हें प्रश्नोत्तरों के द्वारा यह पता चला कि मॉरीशस में वैदिक ग्रन्थों का अच्छा प्रचार हुआ है। स्वामी जी महाराज ने अपने भाषणों में स्वामी मंगलानन्द जी द्वारा व्यक्त निराशा के विपरीत अति संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इस देश में हिन्दी, भारतीय संस्कृति और वैदिक धर्म की रक्षा भारत से कहीं अधिक हुई है। उन्होंने विद्या प्रचार, धर्म प्रचार और समाज सेवा की दिशाओं में आर्य समाज के कार्यों को देखकर कार्यकर्ताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि भारत मॉरीशस का ज्येष्ठ भ्राता है और मॉरीशस भारत का छोटा भाई है। आज छोटा भाई बड़े भाई से धर्म, संस्कृति की रक्षा की दिशा में आगे निकल गया है।

सन् १९७० के दशक में जब भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी मॉरीशस आई थीं तब यहाँ भारतीय संस्कृति का साकार रूप देखकर इस देश को लघु भारत की संज्ञा से अभिहित किया था। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने इस देश को भारत का छोटा भाई कहा।

पाठकवृन्द! विश्व में मॉरीशस ही एक ऐसा देश है जहाँ भारत के समान ही चौबीसों घण्टे रेडियो टेलीविजन पर हिन्दी भाषा गूँजती रहती है। प्रतिदिन रेडियो से धार्मिक सन्देश सुने जा सकते हैं। वेद मंत्रों की ध्वनि से सभी के कर्ण पवित्र होते रहते हैं। यह कृपा यहाँ की धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं की ही है।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001

अब मात्र आधी कीमत में ₹ 80

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

(३१ मई, अहिल्या बाई होल्कर जयन्ती पर विशेष)

अहिल्या बाई होल्कर

– ज्योत्स्ना भोंडवे

'ईश्वर ने मुझ पर जो जिम्मेदारी सौंपी है, मुझे उसे निभाना है। प्रजा को सुखी रखने व उनकी रक्षा का दायित्व मुझ पर है। सामर्थ्य व सत्ता के बल पर मैं जो कुछ भी यहाँ कर रही हूँ, उस हर कार्य के लिए मैं जिम्मेदार हूँ, जिसका जवाब मुझे ईश्वर के समक्ष देना होगा। यहाँ मेरा अपना कुछ भी नहीं, जिसका है मैं उसी को अर्पित करती हूँ। जो कुछ है वह उसका मुझ पर कर्ज है, पता नहीं उसे मैं कैसे चुका पाउँगी,' यह कहना था उस नारी शासिका का, जिसे दुनिया प्रातः स्मरणीया देवी अहिल्याबाई होल्कर के नाम से जानती व मानती है।

इतिहास के उस दौर में जब नारी शक्ति का स्थान समाज में गौण था। शासन की बागडोर उपासक व धर्मनिष्ठ महिला को सौंपना इतिहास का अनूठा प्रयोग था। जिसने दुनिया को दिखा दिया कि शस्त्रबल से सिर्फ दुनिया जीती जाती होगी, लेकिन लोगों के दिलों पर तो प्रेम और धर्म से ही राज किया जाता है, जिसकी मिसाल हैं देवी अहिल्याबाई होल्कर।

अपनी निजी जिन्दगी में बेहद दयालु व क्षमाशील होने के बावजूद आप न्याय व्यवस्था के पालन में बेहद सख्त एवं निष्पक्ष थीं। उसकी मर्यादा भंग करने वालों व प्रजा का अहित चाहने वालों पर आपने कभी दया नहीं दिखाई। वे अपराधी को बतौर अपराधी ही देखती थीं। फिर चाहे वह राजपरिवार का सदस्य या सामान्य नागरिक ही क्यों न हो!

शासन व्यवस्था पर आपकी पकड़ जबर्दस्त थी। उनके आदेश का अनादर करने का दुस्साहस किसी में भी न था और अपनी प्रशंसा या चाटुकारिता से उन्हें सख्त चिढ़ थी। यही वह गुण था जिसकी वजह से वे इतना कुशल शासन और जनकल्याण कर सकीं।

राज्य की आंतरिक व्यवस्था एवं बाह्य सुरक्षा के लिए वे सेना की अहमियत से अच्छी तरह वाकिफ थीं। तमाम जिन्दगी धर्माचरण में व्यतीत करने के बावजूद आपने सेना की उपेक्षा नहीं की। सेना को अस्त्र-शस्त्र से सज्जित करने व उसके प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया।

प्रशासकीय व कूटनीतिक गतिविधियों के साथ आपका आर्थिक नजरिया भी गौरतलब है। जिस होल्कर राज्य की वार्षिक आमदनी सूबेदार मल्हारराव होल्कर के समय में ७५ लाख रुपए थी, वह देवी अहिल्याबाई के समय के अंतिम वर्षों में सवा करोड़ रुपए तक पहुँच चुकी थी। उस दौरान जब संचार एवं यातायात के साधनों का अभाव रहा, आपने पर्राज्यों में द्वारका से जगन्नाथपुरी व बद्रीनाथ से रामेश्वर तक जनकल्याणकारी कार्यों से अपनी रचनाधर्मिता का परिचय दिया, जो आपकी स्थितप्रज्ञ भूमिका से परोपकारी कार्यों को करने की प्रबल इच्छाशक्ति का प्रतीक है।

यही वजह है कि अलौकिक धर्माचरण व असीम दान, धर्म और मंदिर निर्माण का जिक्र आते ही आपका नाम सबसे पहले श्रद्धा के साथ लिया जाता है। जिन्दगी के सारे कार्य करते आपका चिन्तन-मनन निरन्तर जारी रहा। प्रसिद्ध इतिहासकार बाबा साहब पुरंदरे (जाणता राजा महानाट्य के निर्माता-निर्देशक) के मुताबिक उनसे बड़ा दुःखी कौन होगा, जिसे अपने ही परिवार के २७ प्रियजनों का बिछोह सहन करना पड़ा। बावजूद इसके अपनी प्रजा व शासन व्यवस्था पर दुःखों को आपने कभी हावी नहीं होने दिया। आदर्श शासिका के नजरिए से आपका योगदान निश्चित ही असाधारण है।

अहिल्याबाई होल्कर (१७२५-१७९५) एक महान् शासक थीं और मालवा प्रांत की महारानी। लोग उन्हें राजमाता अहिल्यादेवी होल्कर नाम से भी जानते हैं। उनका जन्म महाराष्ट्र के चोंडी गाँव में १७२५ में हुआ था। उनके पिता मानकोजी शिंदे खुद धनगर समाज से थे, जो गाँव के पाटिल की भूमिका निभाते थे।

उनके पिता ने अहिल्याबाई को पढ़ाया-लिखाया। अहिल्याबाई का जीवन भी बहुत साधारण तरीके से गुजर रहा था। लेकिन एकाएक भाग्य ने पलटी खाई और वह १८वीं सदी में मालवा प्रांत की रानी बन गईं।

युवा अहिल्यादेवी के चरित्र और सरलता ने मल्हार राव होल्कर को प्रभावित किया। वे पेशवा बाजीराव की सेना में एक कमांडर के तौर पर काम करते थे। उन्हें अहिल्या इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने उनकी शादी अपने बेटे खांडे राव से करवा दी। इस तरह अहिल्या बाई एक दुल्हन के तौर पर

मराठा समुदाय के होल्कर राजघराने में पहुँचीं। उनके पति की मौत १७५४ में कुंभेर की लड़ाई में हो गई थी। ऐसे में अहिल्यादेवी पर जिम्मेदारी आ गई। उन्होंने अपने ससुर के कहने पर न केवल सैन्य मामलों में बल्कि प्रशासनिक मामलों में भी रुचि दिखाई और प्रभावी तरीके से उन्हें अंजाम दिया। मल्हारराव के निधन के बाद उन्होंने पेशवाओं की गद्दी से आग्रह किया कि उन्हें क्षेत्र की प्रशासनिक बागडोर सौंपी जाए। मंजूरी मिलने के बाद १७६६ में रानी अहिल्यादेवी मालवा की शासक बन गईं। उन्होंने तुकोजी होल्कर को सैन्य कमांडर बनाया। उन्हें उनकी राजसी सेना का पूरा सहयोग मिला। अहिल्याबाई ने कई युद्धों का नेतृत्व किया। वे एक साहसी योद्धा थीं और बेहतरीन तीरंदाज। हाथी की पीठ पर चढ़कर लड़ती थीं। हमेशा आक्रमण करने को तत्पर भील और गोंड्स से उन्होंने कई बरसों तक अपने राज्य को

सुरक्षित रखा। रानी अहिल्याबाई अपनी राजधानी महेश्वर ले गईं। वहाँ उन्होंने १८वीं सदी का बेहतरीन और आलीशान अहिल्या महल बनवाया। पवित्र नर्मदा नदी के किनारे बनाए गए इस महल के ईर्द-गिर्द बनी राजधानी की पहचान बनी टेक्सटाइल इंडस्ट्री। उस दौरान महेश्वर साहित्य, मूर्तिकला, संगीत और कला के क्षेत्र में एक गढ़ बन चुका था। मराठी कवि मोरोपंत, शाहिर अनंतफंडी और संस्कृत विद्वान् खुलासी राम उनके कालखंड के महान् व्यक्तित्व थे।

एक बुद्धिमान, तीक्ष्ण सोच और स्वस्फूर्त शासक के तौर पर अहिल्याबाई को याद किया जाता है। हर दिन वह अपनी प्रजा से बात करती थीं। उनकी समस्याएँ सुनती थीं। उनके कालखंड (१७६७-१७९५) में रानी अहिल्याबाई ने ऐसे कई काम किए कि लोग आज भी उनका नाम लेते हैं। अपने साम्राज्य को उन्होंने समृद्ध बनाया। उन्होंने सरकारी पैसा बेहद बुद्धिमानी से कई किले, विश्राम गृह, कुएँ और सड़कें बनवाने पर खर्च किया।

एक महिला होने के नाते उन्होंने विधवा महिलाओं को अपने पति की संपत्ति को हासिल करने और बेटे को गोद लेने में मदद की। इंदौर को एक छोटे-से गाँव से समृद्ध और सजीव शहर बनाने में अहम भूमिका निभाई।

अहिल्याबाई होल्कर का चमत्कृत कर देने वाले और अलंकृत शासन १७९५ में खत्म हुआ, जब उनका निधन हुआ।

उनकी महानता और सम्मान में भारत सरकार ने २५ अगस्त १९९६ को उनकी याद में एक डाक टिकट जारी किया। इंदौर के नागरिकों ने १९९६ में उनके नाम से एक पुरस्कार स्थापित किया। असाधारण कृतित्व के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है। इसके पहले सम्मानित शख्सियत नानाजी देशमुख थे।

काश्मीर के शर्मनाक हालात पर एक माँ का पैगाम पुत्र के नाम

फोन किया माँ ने बेटे को,
तूने नाक कटाई है
तेरी बहना से सब कहते,
बुजदिल तेरा भाई है
ऐसी भी क्या मजबूरी थी,
ऐसी क्या लाचारी थी
कुछ कुत्तों की टोली कैसे,
तुम शेरों पर भारी थी?
वीर शिवा के वंशज हो तुम,
चाट क्यों ऐसे धूल गए
हाथों में हथियार तो थे क्यों,
उन्हें चलाना भूल गए
गीदड़ बेटा पैदाकर के,
मैंने कोख लजायी है?
तेरी बहना से सब कहते,
बुजदिल तेरा भाई है

पुत्र का उत्तर

इतना भी कमजोर नहीं था,
माँ मेरी मजबूरी थी
ऊपर से फरमान यही था,
चुप्पी बहुत जरूरी थी
सरकारें ही पिटवाती हैं,
हमको इन गद्दारों से
गोली का आदेश नहीं है,
दिल्ली के दरबारों से
गिनगिन कर मैं बदले लूँगा,
कसम ये मैंने खायी है
तू गुड़िया से कह देना,
ना बुजदिल तेरा भाई है

प्रेरणा

साधारण, पर असाधारण

जब भी महिलाओं के समानाधिकार की बात आती है, भारतवर्ष में प्रायः यह धारण बनी हुयी है कि इस विभेद में हम आगे हैं। यह भी प्रायः सर्वस्वीकृत तथ्य है कि पाश्चात्य जगत् में ऐसी स्थिति का अभाव है, परन्तु यह सही नहीं है। अनेक पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि सर्वाधिक विकसित समझे जाने वाले सभ्य देश अमेरिका में भी पुरुषों और महिलाओं के मध्य विभेद कि स्थिति है, यहाँ तक कि एक ही पद पर, एक जैसा कार्य कर रहे पुरुष को उसी पद पर तथा वैसा ही कार्य कर रही महिला से कहीं अधिक वेतन मिलता है। इस स्थिति को दूर करने के लिए जिस महिला ने संघर्ष किया उसने एक साधारण घर में जन्म लिया तथा सामान्य महिला के तौर पर जीवन व्यतीत किया पर यह भी सिद्ध कर दिया कि आवश्यक नहीं है कि समाज में गंभीर व दूरगामी परिवर्तन लाने के लिए उपयुक्त पात्र कोई असाधारण व्यक्तित्व ही होता है। प्रेरक व्यक्तित्वों की इस कड़ी में आज हम लिली लेडबेटर की चर्चा कर रहे हैं जिसने, जब उसे यह ज्ञात हुआ कि उसे समान पद पर कार्य कर रहे अपने सहकर्मी से काफी कम वेतन दिया गया था तो उसने इस अन्याय के विरुद्ध विगुल बजा दिया और वे 'लिली लेडबेटर फेयर पे एक्ट २००९' लागू कराने में सफल हुयीं।

लिली का जन्म एक साधारण परिवार में सन् १९३८ में जेक्सनविले अलावामा अमेरिका के ग्रामीण क्षेत्र में हुआ। लिली के पिता एक मेकेनिक थे। १९५६ में वहाँ के हाई स्कूल से उसने पढ़ाई पूर्ण की। १९६८ में उन्होंने एच-आर ब्लॉक प्रिपरेशन एक्जाम पास किया। यह सब उन्होंने कठिन परिस्थितियों में किया। २० शताब्दी के तीसरे-चौथे दशक में दक्षिण अमेरिका के ग्राम्य क्षेत्र में स्कूल जाने का अधिक रुझान नहीं था। प्रायः बच्चे बीच में ही स्कूल छोड़ देते थे और खेती-बाड़ी में लग जाते थे। लिली को भी उसकी दादी के फार्म हाउस में कई-कई घंटे काम करना पड़ता था।

लिली कि शादी चार्ल्स लेडबेटर के साथ हुयी। १९७८ तक लिली ने कई जगह काम किया। मई १९७४ से दिसंबर १९७५ तक उन्होंने जेक्सनविले राजकीय विश्व विद्यालय में वित्तीय सलाहकार के रूप में भी काम किया। अंततोगत्वा उन्होंने १९७९ में गुडयीयर टायर एंड रबर कम्पनी में एरिया मैनेजर के रूप में कार्य किया। जहाँ से वे १९९८ में रिटायर हुयीं। वे मेहनती थीं। यह भी दिलचस्प बात है कि अमेरिका जैसे प्रगतिशील कहाए जाने वाले देश में गुडयीयर टायर एंड रबर कम्पनी में अधिकारी स्तर पर कार्य करने वाली वे प्रथम महिला थीं इस कारण उन्हें विभेद का सामना भी करना पडा। समकक्ष सहयोग नहीं देते थे तो अधीनस्थ आदेश देने पर जबाब यहाँ तक दे देते थे कि वे महिला का आदेश केवल घर पर मानते थे आफिस में नहीं। ऐसे माहौल में भी लिली विचलित नहीं हुयीं। कार्य, लगन के साथ कार्य, श्रेष्ठ दर्जे का कार्य करना ही इसका जबाब था और उन्होंने वही किया और लोगों के दिलों में अपने प्रति सम्मान पैदा करने में सफल हुयीं।

गुडयीयर कम्पनी में ज्वाइन करते समय लिली से कांट्रेक्ट भरवाया गया था कि वे न किसी को अपना वेतन बतायेंगी न किसी से वेतन पूछेंगी। अतः सेवानिवृत्ति से कुछ समय पहले तक लिली को नहीं पता था कि उनके सहकर्मी को क्या वेतन मिलता था। सेवानिवृत्ति से कुछ समय से पूर्व किसी ने उनके पोस्ट बॉक्स में एक स्लिप डाली जिससे उन्हें पहली बार यह पता चला कि उनके साथ कार्य कर रहे पुरुष मैनेजर को उनसे १००० से १५०० डालर प्रति माह ज्यादा वेतन मिल रहा है बावजूद इसके कि लिली को सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी का पुरस्कार मिल चुका था। केवल महिला होने के कारण कम वेतन- यह स्थिति लिली को स्वीकार नहीं थी। उन्होंने सक्षम ट्रिब्यूनल में शिकायत की। नतीजा यह हुआ कि कम्पनी ने लिली को ऐसी जगह लगा दिया जहाँ उन्हें भारी-भारी टायर उठाने पड़ते थे। यह कम्पनी का अपना तरीका था लिली को हतोत्साहित करने का ताकि वे अपनी शिकायत वापस ले सकें। पर लिली कोई और ही मिट्टी से बनीं थीं वह हार मानने वालों में से नहीं थीं। जब ट्रिब्यूनल से परिणाम न निकला तो सेवानिवृत्ति के पश्चात् उन्होंने कोर्ट में अपना दावा प्रस्तुत किया। जिला अदालत से लिली को तीस लाख डालर का कम्पेंसेशन दिया जिसे कोर्ट ने बाद में घटा कर तीन लाख डालर कर दिया। परन्तु कम्पनी इस निर्णय के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में चली गयी। सुप्रीम कोर्ट ने जिला अदालत के निर्णय को पलटते हुए लिली का दावा खारिज इस बिना पर कर दिया कि वादी को पहले पे डिस्क्रिमिनेशन चेक प्राप्त होने के १८० दिन के भीतर दावा प्रस्तुत कर देना चाहिए था जबकि उसने डेढ़ हजार से भी अधिक दिन बाद दावा किया। लिली ने लाख दुहायी दी कि उन्हें स्वयं नहीं पता था कि उनके साथ इस प्रकार का कोई विभेद किया जाता है क्योंकि कम्पनी के अनुबंध के अनुसार वे न किसी से उसका वेतन पूछ सकतीं थीं और न ही अपना वेतन किसी को बता सकतीं थीं परन्तु शीर्ष अदालत ने उस पर ध्यान नहीं दिया। लिहाजा लिली यह मुकदमा हार गयीं उनको स्वयं को तो कुछ नहीं मिला यहाँ तक कि अपने वकील को देने के लिए भी उनके पास पैसे नहीं थे-

इस पर भी लिली ने बस नहीं की। वे नेताओं से, राजनीतिज्ञों से, सीनेट के सदस्यों से मिलती रहीं और इस अन्याय को समाप्त करने के लिए कानून बनाने को प्रेरित करती रहीं। लिली को अब भली भाँति पता था कि उन्हें कुछ हासिल नहीं होने वाला है पर अन्यों को न्याय मिले यह उनका उद्देश्य बन गया। सुप्रीम कोर्ट में मुकदमे की सुनवायी कर रहे जस्टिस रूथ बदर गिस्बर्ग ने अपनी टिप्पणी लिली के पक्ष में निम्न प्रकार दी थी -

'Lilly Led better was a supervisor at **Goodyear Tire and Rubber's** plant in Gadsden, Alabama, from 1979 until her retirement in 1998. For most of those years, she worked as an area manager, a position largely occupied by men. Initially, Led better's salary was in line with the salaries of men performing substantially similar work. Over time, however, her pay slipped in comparison to the pay of male area managers with equal or less seniority. By the end of 1997, Led better was the only woman working as an area manager and the pay discrepancy between Led better and her 15 male counterparts was stark: Led better was paid $3,727 per month; the lowest paid male area manager received $4,286 per month, the highest paid, $5,236'

इस बात ने भी लिली को सदैव प्रेरित किया। अंत में उसके प्रयास रंग लाये। राष्ट्रपति बनने के बाद प्रथम कानून के रूप में १८ जनवरी १९९८ को ओबामा ने Lilly Ledbetter Fair Pay Act 2009 पर हस्ताक्षर किये। यद्यपि यह दिन देखने के लिए लिली के पति इस दुनिया में नहीं रहे। उनका दुखद निधन १९९७ में हो गया।

अभी भी काम समाप्त नहीं हुआ है ऐसा लिली का मानस है वे महिलाओं के सामान अधिकारों के पैरोकार के रूप में दुनिया भर में जागृति लाने हेतु यत्नशील हैं। इन भाषणों से तथा उन पर बनायी फिल्मों से उन्हें कुछ आय भी हो जाती है।

लिली ने साबित कर दिया है कि साधारण लोग भी ठान लें तो असाधारण काम कर सकते हैं।

- अशोक आर्य

पूरा नाम-

चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०५/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (पञ्चम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	र्व	१	■	२	न	२	२	■	■
■	३	र	३		३ मी	■	४		ति ४
५	क्ष	५	■	६	र्था		मी ६	■	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. राजा अपने ही राज्य में सत्कार पाता है जबकि संन्यासी .... मान पाता है?

२. तपश्चर्या के लिये कौनसा आश्रम परिगणित किया गया है?

३. जो संन्यास के मुख्य धर्म सत्योपदेशादि नहीं करते वे क्या हो जाते हैं?

४. संन्यासी सब संसार की ....किया करें।

५. वैरागी, गुंसाई, खाखी आदि में संन्यास का एक भी.............नहीं हैं।

६. तत्कालीन समय में वैरागी, गुंसाई, खाखी आदि के आचरणों को देख महर्षि दयानन्द ने इनको किस आश्रम में माना?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/१७ का सही उत्तर

१. दुर्दशा २. कृत ३. संन्यासी
४. परमात्मा ५. अग्निहोत्र
६. अधर्माचरण ७. तीन

"विस्तृत नियम पृष्ठ २१ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जून २०१७

समाचार

आर्य समाज, केसरगंज, अजमेर का स्थापना दिवस

आर्य समाज, केसरगंज,अजमेर ने अपना १४३वाँ स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम में प्रो. चन्द्रकान्त शास्त्री, स्वामी सोमानन्द सरस्वती तथा विशिष्ठ अतिथि श्री नवीन मिश्र ने भाग लिया। इस अवसर पर आचार्य अमरसिंह शास्त्री के ब्रह्मत्व में वृहद् यज्ञ हुआ। अध्यक्षीय उद्बोधन में आर्य समाज के प्रधान प्रो. रासासिंह रावत, पूर्व सांसद ने कहा कि आर्य समाज एक क्रान्तिकारी विचारधारा है। सत्य का मार्ग दिखाने वाला है। आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलकर ही आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है। कार्यक्रम का संचालन मंत्री चन्द्रराम आर्य ने किया।

- कल्याण सिंह आर्य, प्रवक्ता

भारतीय नववर्ष धूमधाम से मनाया गया

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनि नगर, जोधपुर द्वारा भारतीय नववर्ष भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा पंडित शिवराम आर्य व गजेन्द्र सिंह थे। इस अवसर पर श्री सेवाराम आर्य ने भारतीय नववर्ष के महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि कृषि उपज व फल सब्जी मंडी के डायरेक्टर राकेश परिहार, पूर्व मंत्री राजेन्द्र गहलोत, किशन लाल आर्य आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच का संचालन श्री शिवराम ने किया एवं संयोजक महेश परिहार ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द उत्सव सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, मध्यप्रदेश के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द उत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिषद् ने श्रीमती

सुमित्रा महाजन, लोकसभा अध्यक्ष एवं संसद सदस्य, इन्दौर को महर्षि दयानन्द का चित्र एवं महर्षि दयानन्द द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। इस अवसर पर श्रीमती महाजन ने कहा कि आज समस्त समाज महर्षि दयानन्द का ऋणी है। उन्होंने हमको शिक्षा, यज्ञ, वेद-पठन आदि का अधिकार दिलाकर नारी जाति को 'मातृ देवो भव' का सम्मान दिलाया। इस अवसर पर आचार्य भानु प्रताप वेदालंकार, श्रीमती स्नेहलता हाण्डा, श्री वेदरत्न आर्य, श्री मनोज सोनी, श्री विजय मालवीय, श्री संजय आर्य आदि आर्य जगत् के वरिष्ठजन उपस्थित थे।

आचार्य भानुप्रताप जी के प्रयत्नों से ही एक मुस्लिम लड़की अन्नू खान का शुद्धि संस्कार होकर उसे मुस्कान आर्य का नाम दिया गया और श्री भारत यादव के साथ उसका विवाह सम्पन्न करवाया गया।

- ओमप्रकाश देवड़ा

अग्निहोत्र महोत्सव सम्पन्न

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात के अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र में निरन्तर एक वर्ष से चलने वाले अग्निहोत्र के पूर्ण होने पर १९ मार्च २०१७ को अग्निहोत्र महोत्सव का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि इस केन्द्र में अग्निहोत्र का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती उत्सव

पश्चिम ओडिशा के प्रमुख शिक्षा केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल आम सेना का स्वर्ण जयन्ती उत्सव दिनांक से २५ दिसम्बर २०१७ तक मनाया जायेगा। गुरुकुल की स्थापना मार्च १९६८ में तपोनिष्ठ स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने की थी। आज यह संस्थान योग्य आचार्यों कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों व उपदेशकों की कर्मभूमि है। १८ अन्य सहयोगी संस्थाओं की स्थापना नागालैण्ड, आसाम, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि प्रदेशों में की गई है। इस अवसर पर सभी आर्य भाई बहिन आमंत्रित हैं।

- स्वामी वृतानन्द सरस्वती, आचार्य

आर्य रत्न श्री भुवनदत्त जी को फिजी का सर्वोच्च सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के ट्रस्टी श्री भुवन दत्त आर्य रत्न जेपी जी को २४ फरवरी २०१७ को ऑफिसर ऑफ द आर्डर ऑफ फिजी अथवा ऑफ अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान फिजी सरकार की ओर से मानवता की उच्च स्तरीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति जार्ज कॉनरोटे द्वारा प्रदान किया गया। यह भारत रत्न की तरह फिजी का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शोक समाचार

आर्य जगत् में वैदिक साहित्य के प्रकाशक एवं प्रचारक के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुके आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक जी का रविवार २ अप्रैल को देहरादून में निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ थे तथा देहरादून में प्राकृतिक चिकित्सा करा रहे थे। सत्यार्थ सौरभ व न्यास परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के सदस्य श्री सुनील कुलश्रेष्ठ का २ अप्रैल २०१७ को अचानक ही हृदयाघात के कारण निधन हो गया। वे मात्र ५६ वर्ष के थे। सुनील जी अपने पिता डॉ. रवीन्द्र वर्मा जी का अनुसरण करते हुए आर्य समाज से व इस न्यास से पूरी तरह जुड़े हुए थे तथा इनके कार्यक्रमों में सपरिवार उपस्थित होते थे। वे अपनी पीछे पत्नी शिखा और पुत्री को छोड़ गए हैं। प्रभु से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें। सत्यार्थ सौरभ व न्यास परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

वैदिक विद्वान् डॉ. मदन मोहन जावलिया नहीं रहे

आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्, लेखक, समीक्षक, मनीषी एवं पत्रकार डॉ. मदन मोहन जावलिया का निधन दिनांक ८/४/१७ को जयपुर में हो गया। डॉ. साहब का जाना आर्य जगत् के निकट अपूरणीय क्षति है। वे विनम्र मृदुभाषी तथा मिलनसार थे और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। अभी वे आर्य समाज, किशनपोल बाजार, जयपुर के वेद प्रचार अधिष्ठाता के दायित्व का निर्वहन कर रहे थे। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं परिजनों को वियोगजन्य इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

वेद ब्रह्माण्डीय पुस्तक है - आचार्य अग्निव्रत

भीनमाल, ०४ अप्रैल, २०१७ वेदों की ऋचाओं से ही संसार की उत्पत्ति, संचालन एवं प्रलय होती है। ऋचाओं के प्रभाव से ही ऊर्जा एवं प्रकाश के कणों को गति मिलती है। सूर्य आदि तत्व भी ऋचाओं के आधार पर ही टिके हैं और उन्हीं से निर्मित हैं। वेद केवल इसी भूमण्डल के लिये नहीं बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिये आधारभूत पुस्तक है। इस पृथ्वी पर जितने भी वेद मंत्र प्रकट हुए, वस्तुतः ब्रह्माण्ड में उनसे भी अधिक मंत्रों का सदैव अस्तित्व रहता है, जो ब्रह्माण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में क्रियाशील रहते हैं।

उक्त विचार श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास के प्रमुख एवं वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने भागलभीम स्थित वेद विज्ञान मंदिर में आयोजित वैदिक विज्ञान का शंखनाद कार्यक्रम में व्यक्त किये, उन्होंने ईश्वर के कार्य करने की पद्धति, द्रव्यमान, ऊर्जा, आकाश आदि की अद्‌भुत्‌ व्याख्या की। आचार्य जी द्वारा समझाए गये विभिन्न विषयों को उनके शिष्य एवं उदीयमान वैज्ञानिक उपाचार्य विशाल आर्य द्वारा ब्रह्माण्ड की वैदिक थ्यौरी को अनेक चित्रों द्वारा स्पष्ट किया गया।आचार्य अग्निव्रत ने बताया कि हमारे द्वारा किये गये वैज्ञानिक भाष्य के आधार पर यदि अनुसंधान होंगे, तो कुछ ही वर्षों में हम विश्व के शीर्ष पर प्रथम स्थान पर होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्वामी वेदानन्द सरस्वती ने बताया कि हमें अपने प्राचीन गौरव को सुरक्षित रखने के लिये वैदिक ग्रन्थों पर अनुसंधान का आश्रय लें। भारतीय प्रतिभाओं को अपने ही देश में खोज के संसाधन व सम्मान मिलना चाहिये। शतायु स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, अलीगढ़ ने सबको प्रेरित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आचार्य अग्निव्रत के स्वप्नों को साकार करने के लिए सब आर्य जनों को सहयोग के लिए आगे आना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए राजस्थान संस्कृत अकादमी के पूर्व सदस्य डॉ. मोक्षराज ने कहा कि भारत के पुनरुद्धार के लिये वेदों की ओर लौटना ही होगा। वैदिक ग्रंथों का विज्ञान अब शीघ्र ही संसार के समक्ष आयेगा, जिसका स्तर यह होगा कि १० नोबेल पुरस्कार भी उसके लिये कम पड़ेंगे।

दो दिन के इस कार्यक्रम में डॉलर फाउण्डेशन के चैयरमेन एवं संस्था के उपप्रमुख आर्यश्रेष्ठी दीनदयाल गुप्ता, आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता, पूर्व कुलपति एवं आई.जी. पुलिस एवं संस्था के सचिव टी. सी. डामोर, महात्मा नरेन्द्र जिज्ञासु, डॉ. वसन्त मदनसुरे, भौतिक वैज्ञानिक प्रो. पी.सी. अग्रवाल एवं डॉ. वेदप्रकाश आर्य, आयुर्वेद वैज्ञानिक प्रो. डॉ महेश शर्मा, मेडिकल सायंटिस्ट डॉ जितेन्द्र नागर एवं डॉ मनोज गुप्ता, सीनियर एडवोकेट एण्ड अटॉर्नी डॉ गौरव सोनी, अहमदाबाद, सीनियर चार्टेड अकाउंटेन्ट मोहन पाराशर,पैब्बंगलोर के एरोस्पेस विभागचैण्क्ण्स्कॉलर शशांक अग्रवाल, भजनोपदेशक पं. केशवदेव शर्मा, विद्या भारती के प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ श्रवण मोदी, सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर से मंत्री भवानी दास आर्य एवं डॉ अमृतलाल तापडिया आदि सैकड़ों प्रबुद्ध जन, शिक्षक, छात्र, इंजीनियर एवं डॉक्टर्स उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त पूर्व मंत्री अर्जुनसिंह देवड़ा, एडिशनल जिला जज अनिल आर्य, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट विवेक शर्मा, भीनमाल, विधायक पूराराम चौधरी, उपजिला कलेक्टर रेणु सैनी, कांग्रेस जिलाध्यक्ष डॉ समरजीतसिंह, गोपाल सिंह पूर्व चेयरमेन कॉपरेटिव सोसायटी, पूर्वमंत्री जोगेश्वर गर्ग, रानीवाड़ा विधायक नारायणसिंह देवल, भवानीसिंह बाकरा, प्रधान धूंखाराम पुरोहित, इंजीनियर बी.एल. सुथार एवं मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली एवं सम्पूर्ण राजस्थान से अनेकों आर्यजन एवं अन्य स्थानीय नागरिक उपस्थित थे।

- जनक सिंह, उपमंत्री, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

स्त्री आर्यसमाज, वैदिक आश्रम, अलीगढ़ का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

स्त्री आर्यसमाज, वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग द्वारा १८ से २० मार्च तक अपना भव्य वार्षिक उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रखर मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रेश जी (गाँधीधाम गुजरात) ने अपने उत्साही प्रेरणा पूर्ण प्रवचनों द्वारा बड़ी संख्या में उपस्थित स्त्री-पुरुषों, युवक-युवतियों व बच्चों को वैदिक संस्कार से न केवल प्रभावित ही किया। अतिथि अलीगढ़ मण्डल के आयुक्त माननीय सुभाष चन्द्र शर्मा ने सदाचार संस्कार के प्रति व्याख्यान द्वारा प्रोत्साहित किया।

श्रीमती रत्नेश भैय्या जी, शशि प्रभा गोयल के साथ-साथ प्रधाना दर्शन भारद्वाज डा. कमला कुमार श्रीमती सुमन वार्ष्णेय,स्वामी चेतन देव वैश्वानर श्रीमती डा. पवित्रा जी एवं ब्रह्मचारिणियों के भजन प्रवचनों ने नगर में धूम मचा दी।

- श्रीमती दर्शन भारद्वाज, प्रधान

डॉ. विनय विद्यालंकार बने उत्तराखण्ड सभा के प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के चुनावों में डॉ. विनय विद्यालंकार को प्रधान, श्री नरेन्द्र लाल आर्य को महामंत्री एवं श्री बसन्त कंसल आर्य को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। सभी को न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०३/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री पृथ्वी वल्लभ देव सोंलकी; उज्जैन (म.प्र.), श्री रमेश आर्य; गुरदासपुर (पंजाब), श्री अच्युता हरकाल; अहमदनगर (महाराष्ट्र), वासुदेव भाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); डिसा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; भीलवाड़ा (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर (राज.), श्री बीरेन्द्र कर, भुवनेश्वर (उड़ीसा), हीरा लाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (राज.), श्री सरस्वती प्रसाद गोयल; सवाईमाधोपुर (राज.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २१ पर अवश्य पढ़ें।

छाछ है महा वरदान

रोज सुबह एक ग्लास ताजा छाछ पीना अमृत सेवन के सामान है।

इससे चेहरा चमकने लगता है। खाने के साथ छाछ पीने से जोड़ों के दर्द से भी राहत मिलती है। छाछ कैल्शियम से भरी होती है।

इसका रोजाना सेवन करने वाले को कभी भी पाचन संबंधी समस्याएँ प्रभावित नहीं करती हैं। खाना खाने के बाद पेट भारी हो जाना अरुचि आदि दूर करने के लिए गर्मियों में छाछ जरूर पीना चाहिए।

एसिडिटी-गर्मी के कारण अगर दस्त हो रहे हों तो बरगद की जटा को पीसकर और छानकर छाछ में मिलाकर पिएँ। छाछ में मिश्री, कालीमिर्च और सेंधा नमक मिलाकर रोजाना पीने से एसिडिटी जड़ से साफ हो जाती है।

रोग प्रतिरोधकता बढ़ाए- इसमें हेल्दी बैक्टीरिया और कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं साथ ही लैक्टोस शरीर में आपकी रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, जिससे आप तुरन्त ऊर्जावान हो जाते हैं।

कब्ज- अगर कब्ज की शिकायत बनी रहती हो तो अजवाइन मिलाकर छाछ पिएँ। पेट की सफाई के लिए गर्मियों में पुदीना मिलाकर लस्सी बनाकर पिएँ।

खाना न पचने की शिकायत- जिन लोगों को खाना ठीक से न पचने की शिकायत होती है उन्हें रोजाना छाछ में भुने जीरे का चूर्ण, कालीमिर्च का चूर्ण और सेंधा नमक का चूर्ण समान मात्रा में मिलाकर धीरे-धीरे पीना चाहिए। इससे पाचक अग्नि तेज हो जाएगी।

विटामिन- बटर मिल्क में विटामिन सी, ए, ई, के और बी पाये जाते हैं जो कि शरीर के पोषण की जरूरत को पूरा करते हैं।

मिनरल्स- यह स्वस्थ पोषक तत्वों जैसे लोहा, जस्ता, फास्फोरस और पोटेशियम से भरा होता है, जो कि शरीर के लिये बहुत ही जरूरी मिनरल माने जाते हैं।

- यदि आप डाइट पर हैं तो रोज एक गिलास मट्ठा पीना ना भूलें। यह लो-कैलोरी और फैट में कम होता है।
- हिचकी लगने पर मट्ठे में एक चम्मच सौंठ डालकर सेवन करें।
- उल्टी होने पर मट्ठे के साथ जायफल घिसकर चाटें।
- गर्मी में रोजाना दो समय पतला मट्ठा लेकर उसमें भुना जीरा मिलाकर पीने से गर्मी से राहत मिलती है।
- मट्ठे में आटा मिलाकर लेप करने से झुर्रियाँ कम पड़ती हैं।
- पैर की एड़ियों के फटने पर मट्ठे का ताजा मक्खन लगाने से आराम मिलता है।
- सिर के बाल झड़ने पर बासी छाछ से सप्ताह में दो दिन बालों को धोना चाहिए।
- मोटापा अधिक होने पर छाछ को छौंककर सेंधा नमक डालकर पीना चाहिए।
- सुबह-शाम मट्ठा या दही की पतली लस्सी पीने से स्मरण शक्ति तेज होती है।
- उच्च रक्तचाप होने पर गिलोय का चूर्ण मट्ठे के साथ लेना चाहिए।
- अत्यधिक मानसिक तनाव होने पर छाछ का सेवन लाभकारी होता है।
- जले हुए स्थान पर तुरंत छाछ या मट्ठा मलना चाहिए।
- विषैले जीव-जन्तु के काटने पर मट्ठे में तम्बाकू मिलाकर लगाना चाहिए।
- कहा जाता है किसी ने जहर खा लिया होतो उसे बार-बार फीका मट्ठा पिलाना चाहिए। परन्तु डॉक्टर की सलाह अवश्य लें।
- अमलतास के पत्ते छाछ में पीस लें और शरीर पर मलें। कुछ देर बाद स्नान करें। शरीर की खुजली नष्ट हो जाती है।

लेखिका - मधु अरोड़ा

हर कोई उपयोगी

कथा सरित

एक भिश्ती के पास दो बड़े पात्र थे, जिसे उसने एक बांस के दो सिरों पर बाँध रखा था। इन दो पात्रों वाले बाँस को अपने कंधे पर रखकर, वह पनिहारी रोज घर से दूर झरने से पानी भरने को निकलता।

उनमें से एक पात्र में एक छोटी-सी दरार थी। इसलिए हर दिन जब वह घर पहुँचता, तो एक पात्र को केवल आधा ही भरा पाता। दूसरा पात्र बिल्कुल दोषहीन था। इसलिए वह सदा पूरा ही भरा मिलता।

बहुत लंबे समय तक, ऐसा हर रोज चलता रहा। पानी-वाहक केवल डेढ़ बर्तन पानी अपने घर पहुँचा पाता।

निष्कलंक पात्र को अपनी काबलियत, अपने कौशल पर, बहुत नाज था। उसे जिस काम के लिए बनाया गया था, वह उस काम को बखूबी अंजाम दे रहा था।

लेकिन बेचारा फूटा पात्र, अपनी खामियों पर शर्मिंदा था। दुखी, कि जिस काम के लिए उसे बनाया गया था, उसे वह केवल आधा-अधूरा ही कर पाता था।

वर्षों की ग्लानि और अपराध-बोध से दबे पात्र ने, एक दिन आखिरकार पनिहार के सामने अपनी कमजोरियाँ और कड़वी विफलताएँ कुबूल करने की हिम्मत जुटा ही ली।

'मैं खुद पर शर्मिंदा हूँ, उसने कहा, और आपसे माफी माँगना चाहता हूँ। मैं आज तक सिर्फ आधा ही पानी घर तक पहुँचा पाया हूँ, क्योंकि घर पहुँचने तक मेरी एक दरार में से पानी लगातार रिसता रहता है।'

'तुमने कभी ध्यान दिया है?' भिश्ती ने उससे पूछा, 'कि झरने से घर तक के रास्ते में केवल तुम्हारी तरफ ही फूल उगे हैं, उत्तम पात्र वाली तरफ नहीं!'

'मैं हमेशा-से तुम्हारे दोष के बारे में जानता था। इसीलिए मैंने तुम्हारे पथ में फूलों के बीज बो डाले। हर रोज झरने से लेकर मेरे घर पहुँचने तक, तुमने मेरे लिए उनकी सिंचाई की है'

'वर्षों तक, मैंने इन खूबसूरत फूलों से अपने घर को सजाया है। अगर तुम वैसे न होते जैसे तुम हो, तो इनकी खूबसूरती मेरे घर को दमका नहीं पाती'

कहानी की सीख ये है कि हम सब में अपने-अपने दोष हैं। निष्कलंक कोई भी नहीं। हम में से हरेक में अद्वितीय त्रुटियाँ हैं। हम सभी फूटे घड़े हैं, लेकिन फिर भी अपने-अपने तरीके से उपयोगी हो सकते हैं।

खामियों के बावजूद पायी सफलता जीवन को परिपूर्ण करती है इसी से हमारे भीतर छुपी गरिमा अनावृत्त होती है। हमारी महानतम महिमा हमारे कभी न गिरने में नहीं, बल्कि गिर-गिर कर हर बार खड़े हो जाने में है।

साभार- अन्तर्जाल

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली

शासन विकेन्द्रीकरण

(ग्राम स्तर से सार्वभौम स्तर तक शासन प्रबन्ध व्यवस्था)

राजा को शासन प्रबन्ध में सुविधा प्रदान करने हेतु मनुस्मृति में, ग्राम स्तरीय व्यवस्था से लेकर सार्वभौम स्तरय तक की रूप रेखा कई सोपानों में की गई है। ग्रामीण शान्ति व्यवस्था हेतु राजा दो, तीन, पाँच और सौ ग्रामों के बीच में एक राज-स्थान डाक बंगला रखे जिसमें यथायोग्य भृत्य अथवा कामदार रख के सब राज्य कार्य पूरे करें।

एक-एक ग्राम में एक-एक मनुष्य की नियुक्ति करे जो ग्राम का अधिपति हो। (जैसा कि आजकल ग्राम प्रधान होता है)। वैसे ही क्रमशः दश गाँव का, बीस गाँव का, सौ ग्रामों का तथा हजार ग्रामों का एक-एक प्रतिनिधि (डेलीगेट) होता जाये (जैसे आज कल ग्राम, थाना, परगना, ब्लॉक, तहसील और जिला होता है)। ग्रामाधिपति अपने ग्राम में उत्पन्न किसी अपराधिक घटना की सूचना (जिसका निदान वह स्वयं न कर सके) दश ग्रामों के अधिपति को दे। इसी प्रकार दश ग्राम वाला बीस ग्राम वाले को, बीस ग्राम वाला यह सब सूचना सौ ग्राम वाले अधिपति को और सौ ग्राम वाला सहस्र ग्राम वाले अधिपति को क्रमशः सूचित करें। तात्पर्य यह है- राजशासन की ईकाई ग्राम से लेकर चक्रवर्ती राज्य के अन्तर्गत पड़ने वाले जिलों, राज्यों तथा देशों की शान्ति व्यवस्था का दायित्व क्रमशः राज सभा, महाराज सभा अर्थात् सार्वभौम चक्रवर्ती महाराज सभा में सब भूगोल का वर्त्तमान जनाया करें।

इसी प्रकार न्याय-व्यवस्था के अन्तर्गत न्यायाधीश राज पुरुषों के कार्यों के निरीक्षणार्थ दश-दश सहस्र ग्रामों पर दो-दो सभापति नियुक्त करें। बड़े-बड़े नगरों में वर्त्तमान व्यवस्थानुसार एक-एक सचिवालय सदृश भवन का निर्माण किया जाये। जिसमें विद्या वृद्ध-जन बैठकर विचार विमर्श करके राज्योन्नति के नियम बनाकर उन्हें प्रकाशित करें।

कर व्यवस्था

इस प्रसंग में महर्षि ने मनुस्मृति के सातवें अध्याय का १३० वां श्लोक उद्धृत किया है।

पंञ्चाशद्भाग आदेयो राज्ञा पशुहिरण्ययोः।
धान्यानामष्टमो भागः षष्ठो द्वादश एव वा॥

अर्थात् शिल्पी, जौहरी व स्वर्णकार अपने लाभांश का पचासवां भाग अर्थात् दो प्रतिशत, चावल आदि धान्य का उत्पादन करने वाले कृषक वर्ग अपनी आय का छठा, आठवां अथवा बारहवां भाग अर्थात् १६, १२ अथवा ८ प्रतिशत राशि कर के रूप में प्रशासन (राजा) को देवें। यहाँ यह शंका की जा सकती है कि कृषक वर्ग हेतु निश्चित कर राशि क्यों निर्धारित नहीं है? यहाँ तीन विकल्प क्यों हैं? तो इस शंका का समाधान यह है कि क्योंकि फसल सदा एक समान नहीं होती। फसल वर्षा पर निर्भर करती है। वर्षा एक समान नहीं होती तथा वर्षा के आधार पर कभी फसल उत्तम होती है, कभी साधारण तो कभी कम। अतः फसल की स्थिति पर ही कर ग्रहण करने का प्रावधान है। मनु का सर्वप्रथम, विधिवेत्ता होना निर्विवाद है। वे सबसे पहले राजा थे जिन्होंने इस शर्त पर राजा बनना स्वीकार किया था कि प्रजा अपनी आय की निश्चित राशि कर के रूप में शासन को देगी। इस राशि का उपयोग प्रशासनिक व्यवस्था हेतु करने का प्रावधान था। संक्षेप में विविध उद्योगों द्वारा अर्जित राशि का निश्चित भाग जो प्रजा द्वारा राज कोष में जमा होता है, कर (अर्थ संग्रह) कहलाता है। कर के अभाव में राष्ट्र का कार्य नहीं चल सकता किंतु यदि वह भार स्वरूप हो जाय तो प्रजा के नाश का कारण होता है। यहाँ शुक्र नीति का वाक्य आवश्यक रूपेण विचारणीय व पालनीय है कि 'मालाकार एवं ग्राह्यों भागो नाङ्गारकारवत्' अर्थात् जैसे माली खिली खिली कलियों का संग्रह करता है, वैसे ही राजा को भी प्रजा से थोड़ा थोड़ा कर ग्रहण करना चाहिये तथा जैसे कोयला बनाने वाला व्यक्ति सारे वृक्ष को जड़ सहित कोयला बनाता है उस प्रकार सबका सब न ले। कर लेने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि कर लेने वाला व्यक्ति कर ले लेवे और कर देने वाले को इसका पता भी न चले। जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों के द्वारा समुद्र से जल लेता है ठीक उसी प्रकार राजा भी कर लेने की विधि अपनाए। जैसे सूर्य पृथ्वी तल से जल का ग्रहण तो करता है किंतु पुनः कई गुना पृथ्वी को, वर्षा के रूप में दे देता है जिससे प्राणी जगत् का कल्याण होता है, ठीक उसी प्रकार कर द्वारा प्राप्त राशि का उपयोग जनहित में होना चाहिए। जिस कर (अर्थ) से जनता का लाभ न होकर कष्ट या असंतोष हो, कर (अर्थ) नहीं अनर्थ है। आय की सुचारूता इसी में है कि आय धर्मानुसार हो, कर लेने में पक्षपात न हो तथा उसका व्यय भी समुचित रूपेण जनहित में हो।

सम्पादक- अशोक आर्य

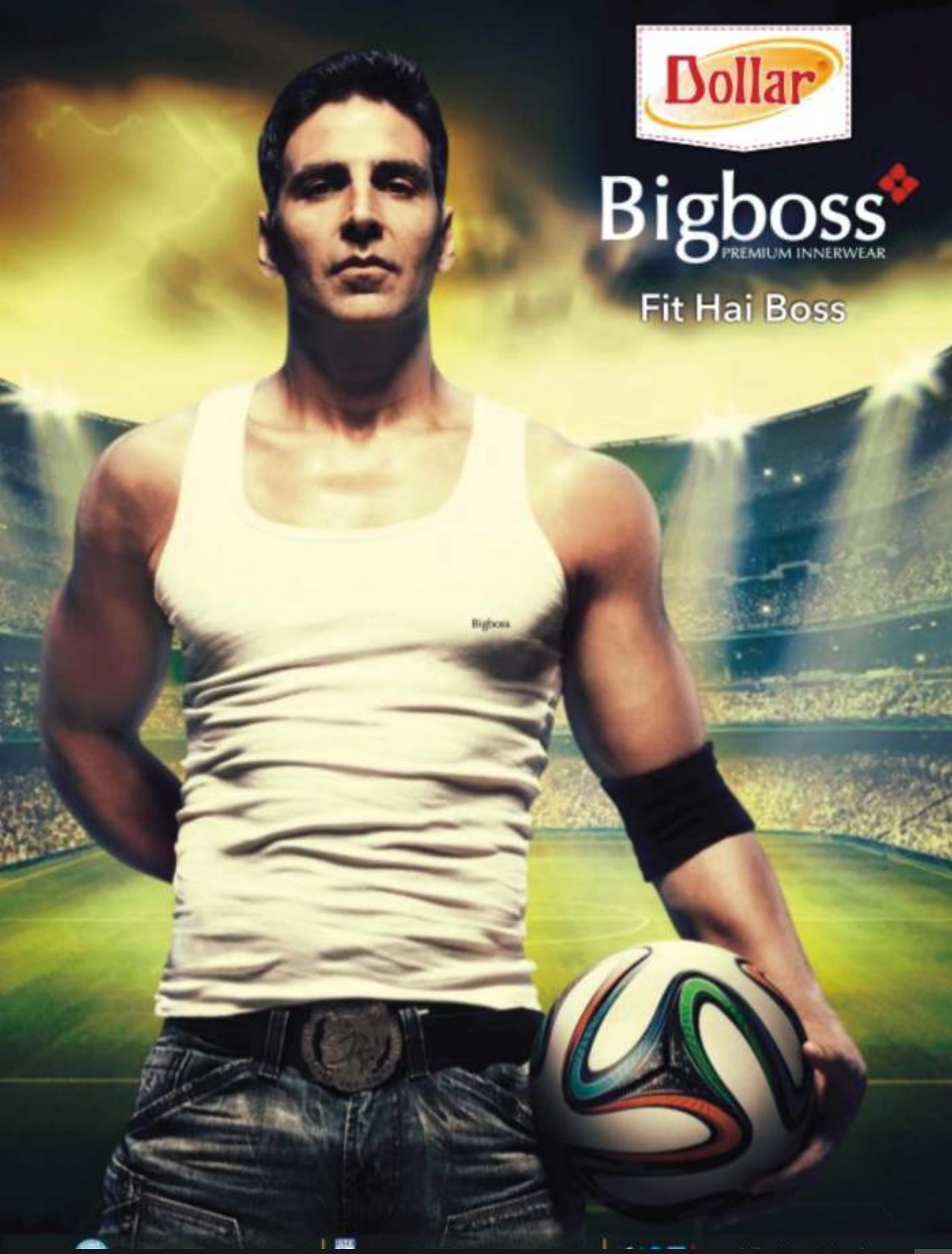

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

वहाँ अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य अनुचर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहैं।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ३७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर